• वर्ष ६६ • अंक १८ • मूल्य ₹ २०

सितम्बर (द्वितीय) २०२४

पाक्षिक

परोपकारी

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द जी की 200 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में एवं आर्यसमाज पाणिनिनगर जोधपुर के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मंच पर मौजूद परोपकारिणी सभा के उप प्रधान श्री जयसिंह गहलोत, न्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, श्री रामनारायण शास्त्री, डॉक्टर सूर्या देवी चतुर्वेदा , स्वामी चेतनानन्द, आचार्य वरुणदेव एवं आर्यसमाज पाणिनिनगर के अधिकारीगण। महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास सहित जोधपुर की अन्य कई आर्य संस्थाओं की आयोजन में विशेष भागीदारी रही।

जयशंकर प्रसाद और स्वामी दयानन्द सरस्वती

'बार्टली के किसान-आसामियों में एक देवकीनन्दन भी थे। मैं उनका आश्रित था। मुझे अन्न मिलता था और मैं काशी में पढ़ता था। काशी की उन दिनों की पंडित मंडली में स्वामी दयानन्द के आ जाने से हलचल मची हुई थी। दुर्गा कुंड के उस शास्त्रार्थ में मै भी अपने गुरु जी के साथ दर्शक रूप में था, जिसमें स्वामी जी के साथ बनारसी चाल चली गई थी। ताली तो मैने भी पीट दी थी। मैं क्विंस कॉलेज के एंग्लो संस्कृत विभाग में पढ़ता था। मुझे वह नाटक अच्छा नहीं लगा। उस निर्भीक संन्यासी की ओर मेरा मन आकर्षित हो गया। वहां से लौट कर गुरुजी ने मुझ से कहा-सुनी हो गई। और जब मैं स्वामी जी के पक्ष का समर्थन करने लगा, तो गुरु जी ने मुझे नास्तिक कह कर फटकारा।'

– श्री जय शंकर प्रसाद, 'तितली' उपन्यास के पृष्ठ संख्या 76 से ज्यों का त्यों उद्धृत।

इतिहास केवल उससे जुड़े ग्रंथों में ही नहीं मिलता। तत्कालीन साहित्य में भी उसके हस्ताक्षर होते हैं। महान् हिंदी साहित्यकार जय शंकर प्रसाद के उपन्यास तितली का यह उद्धरण इसकी पुष्टि करता है। इससे स्पष्ट होता है कि वे काशी शास्त्रार्थ के दौरान महर्षि दयानन्द के साथ हुई धूर्तता और छल से भिज्ञ थे। इससे उत्पन्न खिन्नता उनके पत्र के माध्यम से अभिव्यक्त हुई।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६६ अंक : १८

दयानन्दाब्द: २००

विक्रम संवत् - भाद्रपद शुक्ल २०८१

कलि संवत् - ५१२५

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२५

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

मुद्रक- डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
८२०९५८६१६६

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर द्वितीय, २०२४

अनुक्रम

०१. संकट-नैतिक मूल्यों का	सम्पादकीय	०४
०२. स्वाहा	आचार्य रामचन्द्र	०५
०३. महर्षि दयानन्द जी से इतनी चिढ़...	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०८
* आचार्य की आवश्यकता		११
* प्रवेश सूचना		११
०४. दयानन्दी षड्यन्त्र या दयानन्द-२	श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु	१२
०५. दुकान (स्टॉल) आवंटन		१५
०६. आइये! विचारें	स्वा.विवेकानन्द सरस्वती	१६
०७. आर्यसमाज के दो नियम	डॉ. रघुवीर वेदालंकार	१८
०८. निवेदन		१९
०९. ज्ञान सूक्त-१८	डॉ. धर्मवीर	२०
१०. शास्त्रार्थ	डॉ. जवलन्त कुमार	२३
* नवीन प्रकाशन पर ५० प्रतिशत की विशेष छूट		२८
११. संस्था समाचार		२९
१२. भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला समारोह		३०
१३.संस्था की ओर से....		३२
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३३
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

संकट-नैतिक मूल्यों का

समय-समय पर इस प्रकार की घटनाएं घटित होती रहती हैं, जो विचारशील व्यक्तियों को उद्वेलित करती हैं। क्षणिक उद्वेलन, त्वरित प्रतिक्रियाएं होते हुए भी इनकी पुनरावृत्ति भी होती रहती है, भले ही वह रूपान्तरित होकर हो। यहीं यह विचारणीय है कि इस प्रकार की घटनाएं रुक क्यों नहीं रही हैं? विगत कुछ महीनों में एकाधिक घटनाएं घटित हुई हैं, जिनकी प्रतिक्रिया भी व्यापक रूप में दिखाई दी। इनका स्थायी समाधान होने पर ही मानवता का कल्याण सम्भव है।

मनुष्य के जीवन की दृष्टि से शिक्षा का स्थान निर्विवाद रूप से सर्वोपरि है, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में भी नैतिक मूल्यों का क्षरण स्पष्ट देखा जा सकात है। यदि किसी राज्य का माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अपने मूल्यांकन स्तर को ऐसा बना देश, कि दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की आधे से अधिक सीटें एक ही बोर्ड के छात्र भर दें, तो यह सहज स्वाभाविक न होकर किसी दुर्नीति को ही व्यक्त करता है।

चिकित्सा शिक्षा का विशिष्ट महत्त्व है, किन्तु उसमें प्रवेश के लिए जिस प्रकार प्रश्न पत्र का परीक्षा पूर्व कुछ विशिष्ट परीक्षार्थियों को सुलभ हो जाना पिछले दिनों नीट की परीक्षा में सम्पूर्ण देश में आक्रोश का कारण बना। इस प्रकार की घटनाएँ प्रतियोगी परीक्षाओं में दिखाई देती ही रहती हैं। किसी प्रिन्टिंग प्रैस को काली सूची में डालना तथा उसका नाम बदलकर पुनः उसी कार्य को करते रहना, पूर्णतः नियन्त्रित क्यों नहीं किया जा सका है? क्या परीक्षा नियामक अथवा सरकार इससे अनभिज्ञ हैं? यदि नहीं, तो इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति के लिए कहीं न कहीं नैतिक मूल्यों का क्षरण उत्तरदायी है।

भारतीय प्रशासनिक सेवा की प्रशिक्षु आई.ए.एस. पूजा खेड़कर का चयन तथा अति महत्त्वाकांक्षा के कारण जांच में पकड़ा जाना नैतिकता के ह्रास का ही परिणाम कहा जा सकता है। यदि गहनतापूर्वक सम्पूर्ण अभ्यार्थियों की जांच हो, तो सम्भव है कुछ और भी मिल जाएं। छोटे-छोटे अधिकारियों की चर्चा के बगैर भी उच्च पदस्थ अधिकारियों के उदाहरण सबके सामने हैं। किसी राज्य के मुख्य सचिव के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति जब जांच में फंसकर दोषसिद्ध होने पर न्यायालय में सजा सुनकर फूट-फूट कर रोते भी लोगों ने देखा है। क्या उसके लिए आर्थिक तंगी अथवा रोजगार प्राप्ति की कठिनाई उत्तरादायी है? निश्चय ही नहीं। स्वाभाविक रूप से कहना होगा कि कहीं न कहीं वह सामाजिक परिवेश जिससे नैतिक मूल्य लुप्त हो रहे हैं, वह भी उत्तरदायी है।

कुछ वर्ष पूर्व निर्भयाकाण्ड ने उद्वेलित किया था। किन्तु क्या वह सिलसिला रुक गया? किसी राज्य को अपवाद न मानकर सम्पूर्ण देश की घटनाओं को समग्रता में विचारकर इनकी पुनरावृत्ति रोकने की महती आवश्यकता है। आज देश का साधारण जन तो कलकत्ता (आरजीकर चिकित्सालय में घटित बलात्कार और हत्या) की घटना से उद्विग्न है, किन्तु क्या नेतृवर्ग की भावनाएँ साधारणजन के सदृश हैं?

इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए तात्कालिक रूप में प्रशासनिक कठोरता, त्वरित न्याय कुछ सहायक हो सकते हैं, किन्तु स्थायी समाधान तो समाज में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के माध्यम से ही सम्भव है और वर्तमान में सर्वाधिक संकट नैतिक मूल्यों का ही है।

डॉ. वेदपाल

स्वाहा

आचार्य रामचन्द्र

स्वाहा शब्द का विनियोग प्रायः अग्निहोत्र में घृत शाकल्य आदि का यज्ञाग्नि में प्रक्षेप करने में किया जाता है। इससे इसका अर्थ भी ऐसा ही माना जाता है। यह सत्य भी है कि स्वाहा शब्द का अर्थ अग्नि में होम करना भी है, किन्तु इतना ही आशय 'स्वाहा' का नहीं है। इससे अनेक भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो गई है। अनेक विद्वान् जब अपने प्रवचन का आरम्भ **'यां मेधाम देवागणाः'** आदि मन्त्र से करते हैं तब वह 'स्वाहा' को छोड़ देते हैं। भले इससे मन्त्रार्थ में कोई विशेष अनार न आता हो किन्तु मन्त्र से स्वाहा पद निरर्थक भी नहीं है। किसी मन्त्र में जब सत्यंब्रवीमि अर्थात् 'मैं सत्य कहता हूँ' तब यह मन्त्र की विशेषता को तो बताता ही रहा है, यदि यह पद न होते तब भी मन्त्रार्थ वही होता। आज भी बात को विशेष बल देने के लिए कहा जाता है- सत्य कह रहा हूँ। स्वाहा पद को ऋषि लोग किन-किन अर्थ का वाचक मानते हैं इस पर विचार किया जाता है। महर्षि जी ने एकाधिक स्थानों पर इस स्वाहा पद की अनेक प्रकार से व्याख्या की है उदाहरणार्थ यजुर्वेद के २२वें अध्याय के एक एक मन्त्र में २०-२० बार स्वाहा शब्द आता है वहाँ प्रकरणानुसार अनेक अर्थ स्वामी जी ने किए हैं। ब्रह्म यज्ञ में चित्रं देवानामुदगादनीकम् मन्त्र भी स्वाहान्त वाला है। इसके भाषा भाष्य में महर्षि जी ने स्वाहा का अर्थ नहीं लिखा, किन्तु संस्कृत भाग में निरुक्त को उद्धृत करते हुए स्वाहा शब्द की विस्तृत व्याख्या की है। वह लिखते हैं- अथात्र स्वाहा शब्दाये प्रमाणम् निरुक्त कारा आहुः

''स्वाहाकृतयः आहुः स्वाहेतत्सु आहेति वा स्वावागाहेति वा प्राहेति वा स्वाहुतं हविर्जुहोति वा तासार्मेषा भवति।''

निरुक्त अ. ८/ख. २०

(सु आहेति वा) सु सुष्ठु कोमलं मधुरी कल्याणकरं प्रियं वचनं सर्वैः मनुष्यै सदा वक्तव्यम्।।

सब मनुष्यों को सदा सुन्दर, कोमल, मधुर, कल्याणकारी और प्रिय वचन सदा बोलने चाहिए। यह स्वाहा शब्द का प्रथम अर्थ है। यह बहुत बड़ी तपस्या है। स्वाहा के इस अर्थ को जीवन में चरितार्थ करने के लिए बहुत बड़ी साधना की आवश्यकता है। विदुर जी कहते हैं-

ब्रहवः सन्ति राजन् सततं प्रिय वादिनः।
अप्रियस्य तु तथ्यस्य वक्ता श्रोता दुर्लभः।।

हे राजन्! संसार में प्रिय बोलने वालों की कमी नहीं है, अप्रिय किन्तु हितकारी वणी बोलने वाले तो दुर्लभ है ही किन्तु वह अप्रिय वाणी जिनके हितार्थ कही जा रही है ऐसी वाणी के सुनने वाले भी दुर्लभ है। इसलिए ऐसी वाणी बोलना आवश्यक है जो अप्रिय होते हुए भी सुष्ठु, मधुर तो हो हितकारी भी हो, अत्यन्त कठिन है। तो फिर ऐसा व्यवहार कैसे किया जाए। अत्यन्त सावधानी रखते हुए भी हित की दृष्टि से यदि कठोर वाणी का प्रयोग करेंगे तो श्रोता को तो क्रोध आएगा ही, वक्ता भी क्रोधाविष्ट हो जाता है। कई बार कठोर वचन नहीं कहना चाहो, परन्तु वक्ता के पास उपयुक्त शब्दों का अभाव होता है। इसके लिए व्यास जी कहते हैं-

''स्वाध्यायनियसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।''

नित्यं स्वाध्याय करिये। स्वाध्याय से आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। इसके साथ ही व्यास जी यह भी कहते हैं कि ज्ञानवान् भी व्यवहार में अपने ज्ञान का प्रयोग न करके अपनी प्रकृति का ही अनुकरण करते

हैं अर्थात् उनके काम, क्रोधादि विकार यथावत् बने रहे हैं अपितु उनमें वृद्धि होती रहती है। प्रकृतिं याान्ति भूतानि। इसलिए स्वाध्याय करने से जो ज्ञान प्राप्त हो, प्रयत्नपूर्वक उसका अभ्यास अर्थात् व्यवहार भी करे इसके लिए सतत् सावधान रहना आवश्यक है। सतत ज्ञानपूर्वक व्यवहार अथवा स्वाध्यायाभ्यास से प्रकृति में ही परिवर्तन होकर न तो शब्दों के चयन में ही कठिनाई रहेगी और अन्तःकरण के कोमल होने से उद्वेगकर वचनों के लिए हृदय में भी स्थान नहीं रहेगा।

स्वाहा शब्द का दूसरा अर्थ है- ''स्वावागाहेति'' स्वा वाक् अर्थात् जो अपनी वाणी है उसको बोले महर्षि जी लिखते हैं

या स्वकीया वाकार ज्ञानमध्ये,
सा यदाह सा वागिन्द्रियेण सर्वदा वाच्यम्।।

अर्थात् वह अपनी वाणी है जो ज्ञानपूर्वक हमारे हृदय में वर्तमान है, केवल वही वाणी सदा बोली जाए तो स्वाहा के इस अर्थ की सिद्धि होगी। अब प्रश्न है, क्या हम सदा अपनी वाणी ही बोलते हैं। इसका उत्तर नहीं में जाएगा। इस दूसरे अर्थ की सिद्धि पहले अर्थ की अपेक्षा अधिक तपः साध्य है। अपने और पराए हित को दृष्टि में रखते हुए सुष्ठु, मधुर, प्रिय वाणी का प्रयोग करते हुए भी असत्य का प्रयोग किया जाता है, वचञ्ना की जाती है। ऐसा करने वाला यह कभी भी ध्यान नहीं रखता कि इससे किसी तीसरे को हानि होगी अथवा यह समाज के व्यापक हित के विपरीत है। जिससे एक को लाभ होता हुआ दिखाई देता है दूसरा भी उसका अनुसरण करता है। इससे संसार में दुष्ट प्रवृत्तियों की वृद्धि होकर निरीह व्यक्ति कुचले जाते हैं। ऐसी वाणी का प्रयोक्ता निश्चय ही अपनी वाणी के अनौचित्य से परिचित होता है। अपने ज्ञान में अनुचित होने से यह वाणी उसकी अपनी स्वकीय नहीं है। मित्र मण्डली में बैठा व्यक्ति अपने मित्रों को प्रभावित करने के लिए जानते बूझते हुए भी व्यर्थ के असत्य भाषण करता है। यह अपनी भाषा नहीं होती, लोकेषणा की भाषा होती है। सामान्यतः जैसे-जैसे लौकिक उन्नति करता जाता है वैसे-वैसे उसकी लोकेषणा बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे लोकेषणा बढ़ती जाती है वैसे-वैसे व्यक्ति स्वयं से दूर होता जाता है। तब वह लोकेषणा की भाषा बोलता है। इसी प्रकार के दोष है पुत्रैषणा और लोकेषणा। इनके वशीभूत भी व्यक्ति स्वयं से दूर हो जाता है।

महाभाष्य के प्रणेता महामुनि पतञ्जलि कहते हैं-

''एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गेलोके काम धुग्भवति।''

यदि एक शब्द का भी सम्यक् ज्ञान प्राप्त करके उस ज्ञान को व्यवहार में लाया जाए तो वह सब प्रकार की उचित कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। ऐसा भी एक शब्द है- ''स्वाहा।''

- सोनीपत, हरियाणा।

सत्यार्थप्रकाश धार्मिक ज्ञान का भण्डार, विद्या सम्बन्धी खोज का कोष, वैदिक धर्म का जंगी मैगज़ीन है। जिसने एक बार इसे पूर्णतया समझकर पढ़ लिया, फिर सम्भव नहीं कि वह कभी वैदिक धर्म से दूर हटे। हम दावे से कह सकते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क को सत्यार्थप्रकाश बहुत-सी नवीन बातें दिखलाता है।

सत्यार्थप्रकाश मतमतान्तरों की अविद्या में सोये हुए पुस्तकों को जगाने का काम देता हुआ उनको मतमतान्तरों के आलस्य का त्याग कराकर वेद सूर्य के दर्शन के लिए पुरुषार्थी बना देता है।

सत्यार्थप्रकाश उस मनुष्य के समान है जो एक हाथ में ओषधि की बोतल और दूसरे हाथ में रोगी के लिए आरोग्यदायक भोजन लिये खड़ा हो। -आर्यपथि क पं. लेखराम जी

कोलकाता काण्ड के बाद महिला अत्याचार के विरुद्ध स्वरचित कविता

- ओमदीप आर्य खंडेलवाल

कहते थे **भारत से देश** में,
सबसे **सुरक्षित नारी** है।
लेकिन, अब **अपराध** हुआ कुछ,
महिलाओं पर भारी है।।

नापाक इरादे करतूतें,
मनसूबें **अत्याचारी** हैं।
धीरे धीरे बढ़ती जा रही,
अति गंभीर बीमारी है।।

नजर उठा कर देखो एक बार,
कितने **बलात्कारी** हैं।
नैतिकता का पतन हो रहा,
नित नए पापाचारी हैं।।

नहीं पता था यहां दरिंदे,
देह के भी व्यापारी हैं।
मां बेटी या फिर हो बहना,
सबको अपनी प्यारी हैं।।

देश हमारा जहां **राम** से,
पुत्र भी **आज्ञाकारी** हैं।
लगता जैसे सरकारें भी,
इन गुंडों से हारी हैं!!

इतनी बढ़ती घटनाओं पर,
क्यों फिर यह **लाचारी** है?
क्यों नहीं कहते ताल ठोक कर,
अपनी जिम्मेदारी है।।

शास्त्र नहीं अब **शस्त्र** उठाओ,
अब तो मारामारी है।
कहता है ये '**ओमदीप**',
संघर्ष हमारा जारी है।।

बचा सको तो बचा लो भैया,
यह जो **कोख** हमारी है।
नारी है यह **सब पर भारी**
नहीं छोटी **चिंगारी** है।।

तो **उठो, जागो**, और टक्कर लो....!,
तो उठो, जागो, और टक्कर लो.....!,
इन निर्मम वहसी हत्यारों से।
भरत से **वीर** नहीं डरते हैं,
चाकू और तलवारों से।

आजादी नहीं मिली कभी भी,
केवल **कविता नारों** से।
कोलाहल ही कोलाहल है,
गांव गली बाजारों से।।

आगे बढ़ **कानून** मांग लो,
संसद के ठेकेदारों से।
एक ही गूंज सुनाई दे बस,
...ये ही मांग सुनाई दे बस,
देश के कोनो चारों से।।

या तो सरेआम लटका दो,
बिजली के नंगे तारों से।
या फिर इनको फांसी दे दो,
सरे राह चौराहों पे।
या फिर इनको फांसी दे दो,
सरे राह चौराहों पे।।

गोविंदगढ़ अलवर राज.
मोबा. ७७९२०१८६००

महर्षि दयानन्द जी से इतनी चिढ़ से कुछ नहीं बनेगा-२

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

हम गत लेख में बता चुके हैं कि 'सनातन धर्म' की संसद् के भीतर न बाहर दुहाई देते हुए किसी भी भाजपाई नेता ने सुधार, उपकार, धर्मप्रचार व जन जागरण के लिए साहसिक आन्दोलन करके एक नया क्रान्तिकारी इतिहास रचने के लिए महर्षि दयानन्द का नाम तक वाणी पर आने नहीं दिया। प्रसंग हो चाहे न हो ये लोग स्वामी विवेकानन्द के शिकागो भाषण की यदा कदा रट लगाते रहते हैं। मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक My Indian Friends में खुलकर स्वामी विवेकानन्द का गुणगान किया है।

उसी पुस्तक में स्वामी विवेकानन्द जी ने मैक्समूलर की प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा है। उसी पुस्तक में मैक्समूलर ने श्रीकृष्ण महाराज की निन्दा में अत्यन्त घृणित शब्दों का प्रयोग किया है। सनातन धर्म का संसद् में शोर मचाने वाले भाजपाइयों तथा विवेकानन्द जी ने आज तक श्रीकृष्ण जी विषयक इन घृणित वाक्यों का प्रतिवाद व निन्दा नहीं की।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी व्यस्तताओं में से समय अवश्य निकाल कर श्रीकृष्ण विषयक अभद्र भाषा का प्रतिवाद तभी कर दिया था तथापि पुस्तक की निन्दनीय भाषा का कड़ा व खरा उत्तर किसी ने अब तक नहीं दिया था। इस लेखक ने एक शताब्दी बीत जाने पर मैक्समूलर की वह पुस्तक खोज कर Maxmuler X Rayed नाम की पुस्तक में गोविन्दराम हासानन्द से इसका उत्तर प्रकाशित करवा कर ही चैन लिया। अनेक सज्जन जो आर्यसमाजी नहीं है वे भी मेरा उत्तर पढ़कर बहुत गद्गद हुए।

मैं १९५४ से वैदिक धर्म विरोधी मत पन्थों तथा पौराणिकों द्वारा आर्य धर्म पर किये गये प्रहार का पता लगते ही आर्यपत्रों में नियमपूर्वक उत्तर देता आ रहा हूँ। 'कुछ तड़प कुछ झड़प' शीर्षक से धर्मवीर जी आर्य की प्रेरणा से वर्षों परोपकारी में यह सेवा करता रहा। कुछ प्रेमियों ने तीन खण्डों में इन्हें प्रकाशित करना चाहा। धर्मवीर जी के निधन के कारण ऐसा न हो सका। परोपकारी में छपे मेरे कई ऐसे लेख धर्मवीर जी के पुरुषार्थ से विरोधियों को अपने पत्रों में प्रकाशित करने पड़े। यह श्री धर्मवीर जी का कीर्तिमान माना जावेगा कि आपने रांची की ईसाई पत्रिका में मेरा उत्तर बिना किसी विपरीत टिप्पणी में छपवा दिया। क्या यह एक नया कीर्तिमान नहीं था? आर्यसमाज को इस घटना का स्मरण करवाना आवश्यक था। नेताओं को मिशन की अब कहाँ चिन्ता है? एक समय था सद्धर्म प्रचारक, आर्य मुसाफिर, आर्य समाचार तथा प्रकाश साप्ताहिक अपनी इस नीति रीति के लिए धार्मिक जगत् में एक विशेष स्थान रखते थे। इस विषय में अब क्या लिखा जावे?

अब पुराने शास्त्रार्थों को ही नये-ये नाम से छापा जा रहा है। उनमें मुद्रण के भयङ्कर दोष बड़े खटकते हैं, परन्तु इस विषय के विशेषज्ञ अब मिलते कहाँ हैं सो यह दोष दूर नहीं हो सकता।

कुछ वर्ष पूर्व मैं अपने लेखों व व्याख्यानों में ऋषि जीवन की कुछ घटनायें मुखरित करता रहता था। इनमें दो घटनायें जीवन की अन्तिम वेला में नाई को ऋषि जी द्वारा पाँच रुपये दिलवाने की थी। ऐसी ही एक और घटना थी। भारतीय जी ने दयानन्द सन्देश में मेरे ऐसे लेख का कड़ा प्रतिवाद किया। मानो कि मुझे ऋषि जीवन की घटनाओं का कुछ ज्ञान ही नहीं। मैंने ऋषि जी के अन्तिम दिनों की घटनाओं को लाला जीवनदास जी आदि प्रत्यक्ष दर्शियों के शब्दों में पुराने समय के पत्रों से सप्रमाण उद्धृत करके उत्तर दे दिया। ऋषि जीवन में भी अपना यह लेख दे दिया। श्रीमान् जी को फिर ऋषि

जीवन में मेरे लेख की सामग्री देनी पड़ी। कौन खेद प्रकट करता है? कौन आभार प्रकट करता है। अभी जुलाई मास के एक साप्ताहिक में श्रीमान् जी का एक लेख छपा है उसमें मेरा नाम लिये बिना मेरा कथन फिर दोहराया गया है। क्या धर्म प्रचार व धर्म रक्षा ऐसे ही होती है?

पादरी शूलब्रैड की ब्यावर की एक घटना मैंने गत कुछ वर्षों में बहुत मुखरित की है। पादरी ऋषि जी से मिलने आ रहे थे। ऋषि धर्म प्रेमियों को उपदेश दे रहे थे। भक्तों ने ऋषि जी से कहा, ''पादरी जी आपसे मिलने आ रहे हैं।'' ऋषि जी ने कहा, ''सत्संग की दरी को लपेट दो।'' भक्तों ने दरी तो लपेट दी, परन्तु यह न समझ सके कि ऋषि ने दरी लपेटेने की आज्ञा क्यों दी? पादरी जी के जाने के पश्चात् इसका कारण पूछा तो ऋषि जी ने कहा, ''यह हमारी सत्संग की दरी है। हमारे छोटे-बड़े इस पर बैठकर उपदेश सुनते हैं। पादरी जी जूतों सहित इस पर चढ़ जाते। सत्संग की दरी का अपमान नहीं होना चाहिए।''

यह है ऋषि का प्रखर राष्ट्रवाद तथा धर्मभाव। ऐसी कोई दूसरी घटना क्या पढ़ने सुनने में आई है? दुर्भाग्य से पूरे देश में वर्तमान काल में आर्यसमाज ने इस सरल परन्तु अद्भुत घटना को कभी मुखरित नहीं किया। इस भूल का सुधार होना चाहिए।

हमारे कुछ लेखक बिना सोच विचार कुछ भी लिख देते हैं। झज्जर वाले स्वामी वेदानन्द जी ने लिखा है, पादरी शूलब्रैड़ ने ऋषि जी से कहा, जनसाधारण में धर्म प्रचार किया करें। राजाओं, जागीरदारों को ये विचार देने का क्या लाभ? यह कथन तो है ही मनगढन्त। पादरी शूलब्रैड ने कहीं भी, कभी भी ऋषि जी से ऐसा नहीं कहा। ब्यावर, अजमेर आदि में एक से अधिक बार पादरी शूलब्रैड ने ऋषि जी को जनसाधारण में प्रचार करते, उपदेश देते सुना। मनगढ़न्त कहानियों से सत्य का हनन होता है और इतिहास दूषित होता है।

मैं भी पैदल ही चलूँगा- पूना में भक्तजन ऋषि की शोभा यात्रा के लिए हाथी सजा करके लाये। ऋषि जी ने हाथी पर बैठने से इन्कार कर दिया। आप बोले, ''मैं भी आपके संग पैदल ही चलूँगा।'' ऋषि जी के इस बड़प्पन का कोई इतिहास प्रेमी मूल्याङ्कन तो करे। न जाने लाला लाजपतराय लिखित ऋषि जीवन में यह कल्पित घटना कैसे घुस गई। ऋषिभक्तों, इतिहास प्रेमियों को अत्यन्त सजग होकर यथार्थ इतिहास ही लिखना व प्रचारित करना चाहिए।

तिरस्कार से दुःखी नहीं हुए- ऋषि जी को धर्म प्रचार करते हुए अनेक बार बैर विरोध और अपमान का सामना करना पड़ा? लाहौर में जिस बाग में ठहरने की व्यवस्था की गई पौराणिक पण्डितों ने वहाँ से आपका डेरा उठवा दिया।

ऋषि जी ने किसी पत्र, लेख तथा उपदेश और व्याख्यान में इस अपमान के विषय में एक भी शब्द नहीं लिखा। वजीराबाद, अमृतसर, गुजराँवाला, प्रयाग और मुम्बई कहाँ उनका विरोध व अपमान नहीं किया गया? आपने अपने अपमान को सर्वत्र हँसते-हँसते सहा। कहीं निरादर होने से न खीजे और न दुःखी हुए। बड़ों का बड़प्पन इसी में तो है।

सम्मान सत्कार पर क्या कभी इतरायी? सम्मान पाकर उसकी भी कभी चर्चा नहीं की। घोर विरोधी पं. श्रद्धाराम फिलौरी ने अन्तिम वेला में आपके प्रति श्रद्धा भक्ति व्यक्त करते हुए आपके नाम एक लम्बा भावपूर्ण पत्र लिखा। आपने इस पत्र का कहीं उल्लेख तक नहीं किया। यह पत्र आपके बलिदान के लगभग सवा सौ वर्ष पश्चात् आपके कागजों से मिला। महापुरुषों के बड़प्पन की पहचान ऐसी ही घटनाओं से हुआ करती है।

ऋषि जी का इन्दौर के महाराज होल्कर ने बहुत सम्मान सत्कार किया। ऋषि जी का साहित्य भी इन्दौर में महाराजा मंगवाता रहा। पहले तो पुस्तकों की राशि का भुगतान किया जाता रहा फिर महाराजा ने राशि के भुगतान की कतई चिन्ता न की। महाराजा ने यह सोचा

होगा कि ऋषि राशि भेजने का आग्रह ही न किया। वे राजाओं के आगे पीछे घूमने वाले संन्यासी नहीं थे। वे धन के दास नहीं थे। संन्यासी हो तो ऐसा।

२७ दिन तक महाराजा मिलने नहीं आया- जोधपुर के राजपरिवार ने ऋषि जी को निमन्त्रण तो दे दिया, परन्तु जोधपुर पहुँचने पर २७ दिन तक महाराजा जसवन्त सिंह ऋषि जी से मिलने ही नहीं आया। इतनी उपेक्षा हुई। महाराज ने समझा होगा संन्यासी स्वयं मिलने आयेगा, परन्तु आप सत्ता व सम्पत्ति वालों के दास नहीं थे। जोधपुर के राजपरिवार के गीत गाते हुए उसके चाकरों ने बहुत कुछ लिखा है। जोधपुर छोड़ने से पहले ऋषि दयानन्द ने जोधपुर में इतना लम्बा समय बिताने पर निराशा व्यक्त करते हुए वहाँ से चले जाने का मन बना लिया। महर्षि को जोधपुर के राजपरिवार के सुधार की चिन्ता तथा खरी-खरी सुनाने का मूल्य चुकाना पड़ा।

उधर ऋषि जी ने जोधपुर छोड़ने का निश्चय किया तो इधर राजपरिवार के प्रेमियों ने अपनी योजना को मूर्तरूप देते हुए आपको विष दे दिया।

कृषकों के संग पैदल ही चल पड़े- महर्षि जी जब गृहत्याग के पश्चात् अपने जन्म के प्रदेश में अन्तिम बार प्रचार यात्रा पर गये तो उन्हें सूरत में किसी ने भोजन भी न करवाया। कई दिन के पश्चात् इस भूल का सुधार हो सका। ऋषि जी ने इस उपेक्षा के लिए किसी को दोष न दिया। इससे बढ़कर हृदय की विशालता क्या होगा?

उसी यात्रा में निकट के कतर ग्राम के भोले भाले कृषकों ने महाराज से अपने ग्राम में उपदेश देने की विनती की तो आपने वहाँ चलने की स्वीकृति दे दी। वे लोग ऋषि जी को रथ में बिठला कर अपने ग्राम में ले जाने को रथ सजा कर ले आये। श्री स्वामी जी महाराज ने रथ पर बैठने से न कर दी और उन ग्रामीणों के संग पैदल ही उस ग्राम को चल पड़े। ऐसा मुनि महात्मा तो कोई विरला ही इतिहास में मिलेगा। ऋषि जीवन के शिक्षाप्रद प्रसंगों तथा घटनाओं पर लिखने व बोलने का इस घटना को मुखरित करने की ओर कोई विशेष ध्यान गया ही नहीं।

महर्षि जी जब पूना यात्रा पर गये तो वहाँ भी आपने वेदोपदेश सुनने व पढ़ने का सबको अधिकारी घोषित किया। इस पर कुछ दलित सज्जन महाराज के पास पहुँचे और कहा, आप सबको वेदोपदेश सुनने का अधिकारी बताते हैं क्या आप हमारी एक पाठशाला में दर्शन देकर वेद का उपदेश करेंगे? यह लिखित प्रार्थना प्राप्त कर आपने वहाँ वेदोपदेश करने की सहर्ष स्वीकृति दी। ऋषि जी अत्यन्त उत्साह व श्रद्धा से अत्यन्त उपेक्षित उन दलितों को उपदेश देने पहुँचे। सहस्रों वर्षों के अन्धकार काल के पश्चात् महर्षि ने भेदभाव की दीवारें गिरा कर उन्हें वेदामृत का पान करवाया। जन्माभिमानी जातिवादी ब्राह्मणों ने इस कारण से ऋषि की शोभा यात्रा में उनका घोर अपमान किया। इतिहास की धारा बदलने के लिए मूल्य तो चुकाना ही पड़ता है।

ऋषि जीवनन की कथा करने वालों को ऐसी-ऐसी घटनाओं का विशेष प्रचार करना चाहिये। ऐसा करने का मूल्य चुकाना पड़ता है।

आर्यसमाज के इतिहास में ऐसे भी लेखक व वक्ता देखे गये हैं जिन्होंने जीवन भर कभी वेद विरोधी मत पन्थों के लेखों व साहित्य का उत्तर देने का साहस नहीं किया। हाँ! आर्यसमाज में जिसके भी विरुद्ध जी में आया लेख लिख दिया। पं. लेखराम जी पहले ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने घर से निकल कर ऋषि जीवन की खोज के लिए दूर-दूर तक यात्रायें कीं। हमने ऐसा भद्र पुरुष तो देखा जिसने पं. लेखराम जी लिखित ऋषि जीवन को 'विवरणों का पुलिन्दा' तक लिख दिया, परन्तु स्वयं निरञ्जन देव शंकराचार्य द्वारा ऋषि के विरुद्ध विष वमन करने के लिए श्री ओम्मुनि जी व मेरे सामने उसका उत्तर देने से अलवर में स्पष्ट इनकार कर दिया।

ऐसे व्यक्ति ने अद्भुत इतिहास रचा जो आजीवन विरोधियों का उत्तर देने का कभी साहस ही न दिखाया।

आर्यसमाज में तो पं. लेखराम जी के विरुद्ध बार-बार लेखनी चलाई। पं. लेखराम रचित ऋषि जीवन के सम्पादन का ढोंग करके शुद्ध को भी अशुद्ध बना दिया। श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक को भी ऐसी सोच व व्यवहार अखरती थी।

राधास्वामी मत आगरा के तीसरे गुरु ने भी उर्दू में ऋषि जीवन लिखा है। उसमें चाँदापुर के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ के समय देशी तथा विदेशी सब पादरियों तथा सब मौलवियों को शास्त्रार्थ में महर्षि को पीठ दिखा कर पहली बार हिन्दुओं ने भागते देखा। इससे पहले विदेशी राज के सैंकड़ों वर्षों में हिन्दुओं ने कभी ऐसे पादरियों व मौलवियों को किसी हिन्दू मुनि महात्मा को बिना बताये पीठ दिखा कर कभी भागते नहीं देखा था।

दुर्भाग्य से आर्यसमाज में ऐसे व्यक्ति इतिहास लेखक बन बैठे जिनमें राधास्वामी गुरु के इन खरे और साहसिक ऐतिहासिक शब्दों को उद्धृत करने का साहस भी नहीं था। राधास्वामी गुरु बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने ऋषि जीवन की इस न्यारी प्यारी घटना पर अत्यन्त निडरता से खुलकर लिखा। इतिहास की रक्षा साहसी लेखक ही कर सकते हैं। यह हर किसी के बस की बात नहीं है।

वेद सदन, नई सूर्यनगरी, अबोहर, पंजाब

आचार्य की आवश्यकता

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं उपदेशक विद्यालय हेतु संस्कृत व्याकरण, उपनिषद्, दर्शन, संस्कृत साहित्य एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थों/सिद्धान्तों का अध्यापन करा सके। ऐसे सुयोग्य वैदिक विद्वान्/आचार्य की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति निम्न दूरभाषों पर सम्पर्क करें।

ओम्मुनि
प्रधान
९९५०९९९६७९

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री
९९१११९७०७३

प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में सञ्चालित आर्ष गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ हैं। वैदिक धर्म के उपदेशक-प्रचारक बनने के इच्छुक युवा प्रवेश हेतु शीघ्र आवेदन करें।

प्रवेश हेतु अविवाहित एवं आठवीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। भोजन एवं आवास की नि:शुल्क सुविधा है। **सम्पर्क सूत्र: ८८९०३१६९६१**

आवश्यक सूचना

परोपकारी के सुधि पाठकों से निवेदन है कि कृपया अपना नाम व पते के साथ दूरभाष संख्या भी अंकित करावें ताकि परोपकारिणी सभा के आगामी कार्यक्रमों से सम्बन्धित सूचनाएँ आपको दूरभाष पर मैसेज के माध्यम से भेजी जा सकें।

परोपकारिणी सभा दूरभाष संख्या - ८८९०३१६९६१

दयानन्दी षड्यन्त्र या दयानन्द के उपकार-२

समीक्षक-धर्मेन्द्र जिज्ञासु

पिछले अंक सितम्बर प्रथम का शेष भाग...

भाग दो -दयानन्दी षड्यन्त्र या दयानन्द के उपकार (समीक्षक : धर्मेन्द्र जिज्ञासु, महामंत्री आर्यवीर दल हरियाणा)

लेखक महोदय बौद्ध मत में कुष्ठ, गण्ड, किलास, सोस तथा अपस्मार के रोगी, पण्डक, पशु-पक्षी यौनिगत प्राणी, माता क्षातक, पिता घातक, बुद्ध के शरीर में रक्त उत्पादक, संघ भेदक, भिक्षुणी दूषण, चोर व ऋणी जैसों के लिए कोई जगह नहीं है। (देखिए महावग्ग ६४-१०३)।

परन्तु हिन्दू धर्म जिसे आप संकीर्ण कहते हैं उसकी विशालता इतनी है कि उसमें सबके लिए जगह है। बौद्ध मत में शूद्रों को मुक्ति प्राप्ति में जरूर समान माना है, परन्तु सामाजिक स्थान नीचे ही रखा है। लेखक महोदय महर्षि दयानन्द जी ने यजुर्वेद के २६वें अध्याय के दूसरे मन्त्र का प्रमाण देकर के कहा है कि शूद्रों को भी वेद पढ़ने का अधिकार है।

स्वामी दयानन्द के जीते जी सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में पौराणिकों लेखकों ने अनेक वेद विरुद्ध बातें प्रक्षेपित कर दीं थीं तथा दूसरा संस्करण प्रकाशित होने से पहले ही स्वामी जी का बलिदान हो गया था। स्वामी दयानन्द जी के साथ जो लोग पुस्तक छापने के कार्य में संलग्न थे। वे पौराणिक मानसिकता के होने के कारण महर्षि दयानन्द जी के अभिप्राय से विरुद्ध शब्दों को उसमें प्रक्षेपित कर देते थे।

प्रथम सत्यार्थप्रकाश में श्राद्ध तर्पण का समर्थन किया गया था और श्राद्ध में मांस के पिण्ड देने लिखे थे। पुस्तक छपने के पश्चात् जब स्वामी जी का ध्यान इसकी ओर आकर्षित किया गया तो उन्हें अत्यन्त दु:ख और आश्चर्य हुआ कि उनकी धारणा और उपदेश के विरुद्ध ऐसे लेख को पुस्तक में कैसे स्थान मिला? स्वामी जी ने तुरन्त ही सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण को वापस ले लिया।

इसका प्रमाण प्रस्तुत है।

राजा जय किशनदास जी ने देवेन्द्र बाबू से कहा था- सत्यार्थप्रकाश में जो मत स्वामी जी का लिखा गया या जो कुछ पीछे परिवर्तित हुआ, उसके लिए स्वामी जी इतने उत्तरदाता नहीं है। स्वामी जी को उस समय प्रूफ देखने का अवकाश ही नहीं था। पहले-पहले स्वामी जी सभी लोगों को अच्छा समझकर उनका विश्वास कर लेते थे। स्वामी जी के लेखक सभी पौराणिक थे, उन्हें अपनी ओर से पुस्तक में कुछ भी मिला देने की हर प्रकार की सुविधा थी। स्वामी जी अपने लिखे को दोबारा नहीं देखते थे। प्रतिलिपि करते समय यदि उसने (पौराणिक लेखक) कुछ वाक्य अपनी ओर से मिला दिए हों तो उसे रोकने वाला कोई न था।

(महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, त्रयोदश अध्याय लेखक बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय)

स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा, बहु विवाह, बाल विवाह जैसी कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया। स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलवाया। यज्ञ करने का, वेद पढ़ने का, गायत्री मन्त्र जपने का, यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार वेद और मनुस्मृति के आधार पर दिलवाया।

लेकिन दूसरी तरफ बौद्ध मत में स्त्रियों को प्रवेश महात्मा बुद्ध के शिष्य आनन्द के बार-बार कहने पर ही मिल सका तथा महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों पर दोष लगाया कि उनकी वजह से बौद्ध मत ५०० वर्ष में ही समाप्त हो जाएगा। उन्हें पुरुष के समान नहीं माना गया। भिक्षुणी को छोटे-बड़े सभी भिक्षुओं को प्रणाम करना जरूरी है (देखिए चुल्लवग्ग, अट्ठ गुरु धम्मा)। स्त्रियों को अपना

सर मुडवाना आवश्यक है। पूरे बौद्ध युग में स्त्रियों को अपने कर्त्तव्यों के संग्राम खुद लड़ने पड़े। उसे विष भरी मदिरा, बारहसिंगा के सींग के समान कुटिल, सर्प जैसी विषाक्त जीभ वाली, यमराज जैसी सर्वभक्षणी, अग्नि जैसी दाहक, विष वल्लरी, रक्त फासी जैसी विशेषणों से सम्बोधित किया गया है। यह मन को सर्वोच्च मानने वालों द्वारा तथा थेरी गाथा व आम्रपाली के जीवनगाथा लिखने वालों के सिद्धान्तों के बिल्कुल प्रतिकूल है। अपवाद स्वरूप बुद्ध और आनन्द के समय में नारी का उल्लेख प्राय: आदर व सद्भावना के साथ हुआ है जैसे विदुषी, सहभागिनी, पतिव्रता, राज्य करने वाले इत्यादि।

प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री रघुवीरसिंह अपनी पुस्तक (जीवन मूल्य बौद्ध धर्म) में लिखते हैं स्वामी दयानन्द जी के विचार तो नारी के बारे में शुरू से आखिर तक उच्चतम ही रहे। स्वामी दयानन्द ने जिस गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ कहा, उसे सुतनिपात के पबज्जया सुत्त के अनुसार बौद्ध मार्गी कूड़े कचरे की जगह मानते थे तथा परिव्राजक बन जाते थे। अम्बलट्ठिक राहुलोवाद सुत्त के अनुसार हालत इतनी खराब थी कि बच्चे तक श्रामणेर बनने लगे, क्योंकि महात्मा बुद्ध ने अविवाहित जीवन को श्रेष्ठ माना था (बुद्ध और बौद्ध धर्म, लेखक चतुरसेन शास्त्री)। सबसे सुगम जीविका उपार्जन बौद्ध भिक्षु बनना समझा गया (उपाली दारक वत्थु, महावग्ग पृष्ठ ५५)। संघ विलासिता के केन्द्र बन गए (एनसीईआरटी प्राचीन भारत ११ कक्षा)।

भिक्षुओं के संयमी जीवन का यह हाल था कि रोगों की संख्या ३ से बढ़कर ९८ हो गई (ब्राह्मण क्षम्मिक सुत्त, खुद्दक निकाय १.३१४)।

१५. पुस्तक- हिन्दू शास्त्रों को डायनामाइट से उड़ा देना चाहिए। जब तक आर्यसमाज के सिद्धान्तों को पूर्ण से नष्ट नहीं किया जाता, हिन्दू समाज सुधार की जरूरत ही नहीं समझेगा।

समीक्षा : लेखक महोदय, जिस सभ्यता संस्कृति को शक, यवन, हूण, मुगल, ब्रिटिश इत्यादि १५०० वर्षों तक छल-कपट, साम-दाम-दण्ड-भेद से भी नष्ट नहीं कर पाए उसे डायनामाइट लगाकर नष्ट करने की बात करना, विक्षिप्त मनुष्य का प्रलाप मात्र है।

कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है गुलशन, जेरे खिजां हमारा।
यूनान मिस्त्र रोमां सब मिट गए जहां से,
बाकी मगर है अब तक नामो निशां हमारा।

अगर किसी व्यक्ति के किसी एक अंग में फोड़ा निकल आए तो क्या उसके शरीर के समस्त अंगों को ही काट के फेंक दिया जाए। जातिवाद के जहर को समाप्त करने की बात तो समझ में आती है, परन्तु केवल इसी के कारण पूरे धर्म को ही नष्ट करने की बात करना मूर्खता के सिवा कुछ नहीं है। आर्यसमाज में, आर्यसमाज के गुरुकुलों में सभी को बिना किसी भेदभाव के प्रवेश दिया जाता है। आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिए या गुरुकुल में प्रवेश के लिए एक प्रश्न आज तक नहीं पूछा गया कि आपकी जन्मगत जाति क्या है?

लेकिन जातिवाद के विरोध में हिन्दुओं से सम्बन्धित हर चीज को कलंक कहना एकदम अनुचित बात है। यह भी उल्लेखनीय है कि महात्मा बुद्ध ने हिन्दू धर्म में सुधार करने के लिए नई विचारधारा चलाई थी, परन्तु नया मत चलाना या हिन्दू धर्म को समूल नष्ट करना उनका उद्देश्य कभी नहीं था। यह सत्य है कि हिन्दू धर्म में जन्मगत जाति-पांति, मूर्ति पूजा, अवतारवाद गुरुड़म इत्यादि विकृतियों बुरी तरह फैली हुई हैं फिर भी हिन्दू धर्म में आस्तिक-नास्तिक, मूर्ति पूजक- निरंकारी, मन्दिर जाने वाले -कभी न जाने वाले, रामकृष्ण दुर्गा काली को मानने वाले या नहीं मानने वाले सभी के लिए जगह है, परन्तु यदि कोई ईसा, मोहम्मद या बुद्ध को नहीं माने तो उसके लिए ईसाइयत, इस्लाम या बौद्ध मत में कोई जगह नहीं है। दूसरी बात यह है कि समय के साथ प्रत्येक व्यवस्था में कमियां या विकृतियां आ जाती हैं, उसकी

वजह से पूरी व्यवस्था को गलत कहना उचित नहीं है। अगर व्यक्ति दोष निकालने पर आ ही जाए तो प्रत्येक चीज में दोष निकाल सकता है।

बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र- एकोनविंश अध्याय से एक प्रसंग पर्याप्त है। स्वामी दयानन्द जी जुलाई अगस्त १८७७ में अमृतसर में थे। अमृतसर के कमिश्नर परकिंस साहब, लाला गुरमुख राय वकील के साथ स्वामी जी से मिलने आए। परकिंस साहब ने कहा कि हिन्दू धर्म सूत के धागे की भांति कच्चा है तो स्वामी जी ने कहा यह धर्म सूत के धागे की भांति कच्चा नहीं है, बल्कि लोहे से भी अधिक पक्का है। लोहा टूट जाए तो टूट जाए, परन्तु यह कभी टूटने में नहीं आता।

परकिंस साहब- आप कोई उदाहरण दें तो हमें विश्वास आए।

स्वामी जी- हिन्दू धर्म समुद्र के समान है। जैसे समुद्र में असंख्य लहरें उठती हैं यही दशा इसकी है। देखिए इसमें ऐसे लोग भी हैं जो पानी को छानकर पीते हैं, ताकि कोई अदृश्य जीव उनके उदर में नहीं चला जाए। ऐसे लोग भी हैं जो दुग्धाहारी है केवल दूध ही पीते हैं अन्य कोई वस्तु नहीं खाते पीते और ऐसे लोग भी इसी में है जो वाममार्गी कहलाते हैं। जो पवित्र-अपवित्र और योग्य-अयोग्य का विचार किए बिना जो कुछ पाते हैं खा जाते हैं। इसमें ऐसे लोग भी हैं जो आयु पर्यन्त ब्रह्मचारी रहते हैं। न तो किसी स्त्री से विवाह करते हैं और न किसी को बुरी दृष्टि से देखते हैं और ऐसे लोग भी इसी में हैं जो पराई स्त्रियों से मुंह काला करते हैं। एक वह हैं जो केवल निराकार परमात्मा की उपासना करते हैं और उसी का ध्यान करते हैं और एक वह हैं जो अवतारों को पूजते हैं। एक वे हैं जो केवल ज्ञानी है और एक वह है जो केवल ध्यानी ही हैं। इसमें वे लोग भी हैं जो छुआछूत का इतना बचाव करते हैं कि अन्य धर्मी तो एक ओर, शूद्रों के हाथ से न पानी पीते हैं, न उनके हाथ का खाना भोजन करते हैं। और वे लोग भी इसी में में ही हैं जो शूद्र के हाथ से पानी भी पीते हैं और उनसे भोजन बनवाकर खाते भी हैं। इन सब बातों के होते हुए भी यह सब के सब हिन्दू कहलाते हैं और वास्तव में है भी हिन्दू ही और कोई इनका हिन्दू धर्म से बहिष्कार नहीं करता। अत: समझना चाहिए कि हिन्दू धर्म बहुत पक्का है, कच्चा नहीं।

पर्किंस- आप किस प्रकार के धर्म का प्रचार करना चाहते हैं?

स्वामी जी- हम केवल यह चाहते हैं कि लोग वेदों की आज्ञाओं का पालन करें और केवल निराकार अद्वितीय परमेश्वर की पूजा और उपासना करें। सब गुण को ग्रहण करें और अवगुणों को त्याग दें।

(संस्करण १९९१, गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली पृष्ठ ३८५-३८६)

१६. पुस्तक- स्वामी दयानन्द जिनको आर्यसमाजी स्वतन्त्रता संग्राम का प्रथम योद्धा मानते हैं, वे अपने भाषणों के अंत में ब्रिटिश सरकार को धन्यवाद दिया करते थे।

समीक्षा : यह लिखना कि स्वामी दयानन्द जी अपने भाषणों के अंत में ब्रिटिश सरकार को धन्यवाद दिया करते थे, अधूरा सत्य है। स्वामी दयानन्द जी ने लॉर्ड नॉर्थब्रुक को ब्रिटिश साम्राज्य में धर्म प्रचार के लिए छूट होने पर धन्यवाद कहा था। जिस पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की अमरता की प्रार्थना करने को कहा, परन्तु स्वामी जी ने कहा था कि मैं चाहता हूं कि ब्रिटिश साम्राज्य शीघ्र समाप्त हो जाए।

महर्षि दयानन्द जी के स्वाधीनता संघर्ष में योगदान को क्रान्तिकारियों, स्वतन्त्रता सेनानियों तथा शीर्ष राजनेताओं ने प्रमाण सहित स्वीकार किया है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। जैसे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, महात्मा गांधी, एनी बेसेंट, रानाडे, सरदार पटेल इत्यादि। स्वराज, स्वदेशी

इत्यादि विचार सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द जी ने ही दिए थे, यह अब ऐतिहासिक तथ्य हैं। तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारियों की गोपनीय रिपोर्टों से स्वामी दयानन्द जी तथा आर्यसमाज का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान स्पष्ट है। अत: आर्यसमाजी यदि उनको स्वाधीनता संग्राम का प्रथम योद्धा मानते हैं तो उसमें कुछ भी असत्य नहीं है।

लेखक महोदय ने आधी अधूरी घटनाओं के माध्यम से महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रश्नचिह्न लगाने का प्रयास किया है, जो कि न्यायोचित नहीं है। जिस आर्यसमाज ने जन्मगत जाति-पांति और छूआछूत के विरुद्ध अनेक बलिदान देकर, इस कुप्रथा की समाप्ति के लिए संघर्ष किया है तथा अपने गुरुकुलों में बिना किसी भेदभाव के सबको शिक्षा दी है, उनको धर्म प्रचारक बनाया है-उसके लिए ये कहना कि समाज के सिद्धान्तों को पूर्ण नष्ट किया जाना चाहिए, लेखक की मानसिक विकृति का ही प्रमाण है। परमात्मा लेखक को सद्बुद्धि प्रदान करें।

महामन्त्री आर्यवीर दल हरियाणा प्रान्त,
वर्तमान निवास हैदराबाद, तेलंगाना

महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित दुकान (स्टॉल) आवंटन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १८, १९ व २० अक्टूबर (शुक्रवार, शनिवार व रविवार) २०२४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्यजगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की दुकान लगती हैं। इस वर्ष से स्टॉल किराया २०००=०० रूपये प्रति स्टॉल किया गया है। खुले में या अपनी इच्छानुसार स्टॉल लगाना निषिद्ध रहेगा। आप अपना पूर्ण सहयोग देकर इस कार्य में सहयोग करावें। जिन महानुभावों की पहले राशि जमा होगी उस क्रम से स्टॉल का निर्धारण होगा। ऋषि मेला-२०२४ हेतु दुकान (स्टॉल) आवंटन में तीन आधार रहेंगे- १- आर्य धार्मिक पुस्तक, २- हवन सामग्री, ओ३म् ध्वज आदि, ३- दवाईयाँ। आपको जितनी स्टॉल की आश्यकता है उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट या नगद या ऑनलाइन जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक को राशि की रसीद दिखाकर स्टॉल संख्या प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित की जायेगी। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोट:**- किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

सम्पर्क-देवमुनि/भूदेव उपाध्याय-७७४२२२९३२७

आइये! विचारें

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की यह उत्कट इच्छा रहती है कि जन-जागरण हो, राष्ट्र-जागरण हो, जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों से अधिक अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान दे। इसके लिए राष्ट्रवाद के महान् उद्घोषक स्वामी दयानन्द सरस्वती की द्वि जन्म-शताब्दी, आर्यसमाज की स्थापना के डेढ़ सौ वर्ष तथा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान-शताब्दी को समारोहपूर्वक मनाने को माध्यम बनाकर सर्वत्र राष्ट्रीय जागरण का कार्यक्रम हो, ऐसा प्रयास करने का विचारा। जिससे राष्ट्र की परिभाषा वास्तव में भूखण्ड मात्र नहीं, अपितु भाषा, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, परम्परा-इनकी सुरक्षा के प्रति जन-जनके अन्दरभावना जागृत हो। उनकी इस योजना के कारण स्थान-स्थान पर आर्यसमाज के द्वारा कार्यक्रम हो रहे हैं। साहित्य के अतिरिक्त अन्य प्रचार के कार्यक्रमों को अपनाया जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं में आर्यसमाज के उज्ज्वल अतीत का साकल्येनयशोगान होता है। यह उचित ही है, क्योंकि जब तक अपने गौरवमय अतीत का बोध न हो, तब तक मनुष्य आगे कैसे बढ़ेगा? क्योंकि इतिहास हमें यह बताता है कि अतीत में हम किस प्रकार आगे बढ़े? तथा अतीत की त्रुटियों को स्मरण करते हुए उनका परिमार्जन करने की प्रेरणा प्राप्त होती है, किन्तु जिन कारणों से आर्यसमाज 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' के लक्ष्य तक नहीं पहुंच पा रहा है, उन कारणों पर ध्यान अत्यल्प गया है। उन कारणों को दूर करने के लिए ही स्वामी श्रद्धानन्द आदि मनीषियों ने सन् १९०९ में सार्वदेशिक सभा का निर्माण किया तथा उस समय के संचालित सभी गुरुकुल एक सूत्र में बँधें ऐसा करने का प्रयास किया, किन्तु अहम् मान्यता एवं व्यक्तिगत संस्थावाद के भाव के कारण परस्पर में आरोप-प्रत्यारोप, यहाँ तक कि न्यायालयों में अभियोग तक किये गए। इस दुरवस्था को दूर करने के लिए कुछ आर्यसज्जनों ने पुनः विचार किया और दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन सन् १९६८ मे हैदराबाद में जो मनाया जा रहा था, उसमें मंच पर ही यह प्रस्ताव रखा गया कि आर्यसमाज में परस्पर अभियोगवादी वृत्ति समाप्त हो और सभी अपने अभियोगों को वापस ले लें। इस कार्य के लिए आनन्द स्वामी जी को अध्यक्ष बनाया गया और उनके निर्देशन में इस एकतापूर्ण कार्य के शुभारम्भ का प्रस्ताव रखा गया, किन्तु प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हो सका, कारण वही था - अहम्मन्यता एवं व्यक्तिगत स्वार्थवाद। इसके पश्चात् पुनः प्रयास किया गया और स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बावाले के साथ तीन व्यक्तियों की एक समिति का प्रस्ताव बनाकर घोषित किया गया कि ये समिति जो निर्णय लेगी, वह आर्यसमाज के कलह-निवारण में कृत कार्य होगी। किन्तु यहाँ भी निहित-स्वार्थों के कारण कुछ अधिकारियों ने इसके निर्णय को मानने में इस समिति को ही नहीं स्वीकार किया और मामला अधर में लम्बित हो गया।

आज ऋषि दयानन्द की द्वि जन्म-शताब्दी के अवसर पर आर्यसमाज के उत्थान के लिए विविध प्रकार की योजनाओं का प्रस्ताव आता है तथा भूत का गुणगान करते हुए अनेक घोषणाएँ होती हैं। आर्यसमाज के परस्पर-कलह को दूर करने के लिए मथुरा में १९२४-२५ में ऋषि दयानन्द की जन्मशताब्दी मनाने का दृढ़ निश्चय किया गया। आर्यों में अति उत्साह था और उसकी पूर्णता के लिए अतिवेग से कार्य प्रारम्भ हुए। इसको देखकर मो. क. गांधी ने, जो अंग्रेजों के प्रच्छन्न क्रीतदास थे, अपनी प्रसिद्ध पत्रिका 'यंगइण्डिया' में २८ मई १९२४ को एक लेख लिखा, जिसमें आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के कार्यों की कटु आलोचना करते हुए यहाँ तक लिखा कि "मैंने सत्यार्थप्रकाश से अधिक

निराशाजनक और कोई पुस्तक नहीं पढी...'' इत्यादि। यह ईसाई व इस्लाम के लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए तथा अपने पौराणिक जगत् को भड़काने के लिए किया था, जिसका उत्तर चमूपति जी ने 'आर्य पत्रिका' में अच्छी प्रकार से दिया था। इस कारण मो. क. गांधी अपनी योजना में सफल नहीं हुए और शताब्दी धूमधाम से मनाई गई, किन्तु एक काम अधूरा रह गया और वह यह कि सम्पूर्ण आर्यजगत् में एकता नहीं बन पायी।

पुनः १९३८-३९ में हैदराबाद-सत्याग्रह-आन्दोलन निजाम के अत्याचारों से पीड़ित होने के कारण उसके प्रतीकार के लिए प्रारम्भ किया गया। इस आन्दोलन को रोकने के लिए मो. क. गांधी ने वरिष्ठ आर्यसमाजी नेता घनश्याम गुप्त को भेजा, किन्तु वहाँ भी वीर सावरकर के प्रोत्साहन के कारण घनश्याम गुप्त मुँह लटकाए वापस लौट आए और आन्दोलन तीव्रगति से चल पड़ा, जिसमें हिन्दू महासभा सहित सभी संगठनों ने आर्यसमाज को सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया। मो. क. गांधी से यह सहन नहीं हुआ और उन्होंने कहा कि यह सत्याग्रह हिन्दू महासभा के सम्मिलित होने के कारण अब साम्प्रदायिक हो गया है, किन्तु उनके इस कुटिल चाल से भी आन्दोलन प्रभावित नहीं हुआ और तानाशाह निजाम को झुकना पड़ा तथा सत्याग्रह पूर्ण सफल रहा।

आर्यसमाज ने राष्ट्रभाषा हिन्दी, संस्कृत, वेशभूषा तथा अन्य राष्ट्रीय विचारधाराओं के सम्बन्ध में जो कार्य किया वह अतुलनीय है, परन्तु उसकी उपेक्षा करके कुछ लेखक अन्यथा कहते रहते हैं, इसका कारण क्या है? विचारने पर यही ज्ञात होता है कि आर्यसमाज में परस्पर कलह का वातावरण बना हुआ है। यदि वह दूर हो जाए तो आर्यसमाज का ही कायाकल्प नहीं, अपितु सारे विश्व का कायाकल्प हो जाएगा और ऋषि दयानन्द का ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का स्वप्न साकार होगा। ''पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः'', ''अन्योऽन्यमभिहर्यत'' की भावना से ओतप्रोत होकर विश्व एकसूत्र में बँधेगा। सर्वत्र सुख-समृद्धि का साम्राज्य होगा। देखते हैं वह दिन कब आता है और आर्यजनता कब अपने नेताओं के स्वार्थ के चंगुल से छूटकर आगे बढ़ती है?

॥ अस्माकं वीराः उत्तरे भवन्तु॥

॥ वैदिकधर्मो विजयतेतराम्॥

कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम,
टीकरी, भोला-झाल, मेरठ (उ.प्र.)

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें।

- मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश तो एक महान् ग्रन्थ है, दूसरे शब्दों में वैदिक धर्म, मतमतान्तर एवं ज्ञान-विज्ञान का विश्व कोष है।
- पं. युधिष्ठिर मीमांसक

आर्यसमाज के दो नियम

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

मैं हिरण्य रथ पर बैठा हुआ एक निर्लेप आत्मा हूँ। मेरे सामने प्रो. विनय विद्यालंकार का परोपकारी में प्रकाशित एक लेख है मैं चाहता हूँ इस पर कुछ लिखना, किन्तु मेरा मन ऐसा करने से मना करता है, क्योंकि प्रो. विनय विद्यालंकार आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा उच्च पद पर विराजमान प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। उनके विषय में कुछ मत लिखो। क्या करूँ? मन की बागडोर तो बुद्धि के हाथ में है। वही इस रथ की सारथी है। कहती है- लिखो, अवश्य लिखो, प्रेमपूर्वक लिख रहा हूँ जो इस प्रकार है-

प्रो. विनय ने प्रथम नियम की व्याख्या में बौद्धिक व्यायाम तो, पर्याप्त किया, किन्तु वह ग्राह्य नहीं है। उन्होंने 'सब सत्य विद्या' का पदच्छेद करके सब सत्य तथा सत्य विद्या अर्थ कर दिया ऐसा नहीं है। इस प्रकार उन्हें दो बार सत्य प्रयोग करना पड़ा। जबकि नियम में केवल एक बार ही 'सत्य विद्या' पढ़ा गया है। यहां पर पठित 'और' पद ही बतला रहा है कि 'सत्य विद्या' पद एक ही है। 'सब' इसका विशेषण है। अर्थात् सभी सत्य विद्याएं तथा जो पदार्थ इन सत्य विद्याओं से जाने जाते हैं। विनय जी ने सत्य का प्रक्षेप करके 'सब सत्य' का अर्थ ईश्वर जीव एवं प्रकृति कर दिया, जो बुद्धिगम्य नहीं है। सत्यविद्या पद एक ही है। यहां दूसरा 'सत्य' पद नहीं आ सकता। सभी सत्य विद्याओं का आदिमूल परमेश्वर है, अर्थ स्पष्ट है।

आगे आप 'पदार्थ' के अर्थ में बहुत खींचतान करके कहते हैं कि यहाँ पदार्थ का अर्थ वस्तु, भौतिक पदार्थ नहीं है, अपितु पद का अर्थ वेदज्ञान है। पद का यह अर्थ आपको किस कोश में मिल गया? क्या दयानन्द ने कहीं ऐसा कहा है या यास्क की साक्षी इसमें है? आप पद+अर्थ=पदार्थ में 'अर्थ' का अर्थ ब्रह्माण्ड करते हैं। यह भी आपकी ऊहा का चमत्कार है। इस प्रकार विनय जी पदार्थ का अर्थ 'वेदज्ञान' करते हैं, जो विद्वानों के लिए विचारणीय है। यहाँ आपने पदार्थ को भौतिक या आध्यात्मिक पदार्थों का वाचक मानकर उक्त कल्पित अर्थ किया है। पदार्थ पद वस्तु के लिए सुप्रसिद्ध है। जो भी सांसारिक भौतिक पदार्थ, चाहे वे भू गर्भ में हों, अन्तरिक्ष में हो या भूमण्डल पर तों उन्हें आप सत्य विद्याओं के द्वारा ही जान सकते हैं, जान रहे हैं। विज्ञान भी वेद प्रतिपादित विद्या है। उससे भी नाना पदार्थों का अन्वेषण हो रहा है। इस प्रकार अर्थ स्पष्ट हुआ कि सत्य विद्या द्वारा ज्ञेय ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थों का आदि मूल परमेश्वर है।

मूल प्रकृति तो त्रिगुणात्मक थी। परमेश्वर ने अपने ईक्षण से उसे भी ब्रह्माण्ड के रूप में परिवर्तित किया। इस प्रकार यही व्याख्या ठीक है कि सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं...। यहां दोबारा सत्य का प्रक्षेप करके 'सब सत्य' बनाने की आवश्यकता नहीं। गुरुकुल झज्जर के मासिक पत्र सुधारक में पं. विरजानन्द जी ने भी इस नियम की आपके समान ही व्याख्या की है। सम्भवत: आपने भी पढ़ा हो। स्मरण रखिए- न हि सर्व: सर्वं जानाति। विरजानन्द जी को अपनी विद्वत्ता का कुछ अधिक ही विश्वास है। आप तो ऐसे ही नहीं हैं। सत्य को ग्रहण करते...सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यही विद्वत्ता है। आपने 'पदार्थ विद्या' को भी एक पद बना दिया, जो सर्वथा अयुक्त है। मूल यह है जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं। पदार्थ का अन्वय 'जो' से है 'विद्या' से नहीं।

अष्टम नियम- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। यहाँ आपने अविद्या का अर्थ योगदर्शन में प्रदर्शित चार प्रकार की अविद्या कर दिया।

महर्षि ने योग के सन्दर्भ में ही उसे उद्धृत किया है। यह अर्थ योग के प्रसङ्ग का ही है, सार्वत्रिक नहीं। अशिक्षा भी अविद्या ही है। महर्षि के समय शिक्षा का उतना प्रचार-प्रसार न था जितना आज है तथापि आज भी अनेक बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। अत: अविद्या का अर्थ अशिक्षा भी है। इसीलिए महर्षि प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य शिक्षा की बात करते हैं। अज्ञान तो अविद्या का सुप्रसिद्ध अर्थ है ही। वह अनेक प्रकार का हो सकता है। वेदों के गलत अर्थ करना भी अविद्या ही है। यह पतञ्जलि प्रोक्त अवद्या की श्रेणी में नहीं आता। इस प्रकार इस नियम में अविद्या तथा विद्या पद विस्तृत अर्थों में प्रयुक्त है।

अपने सारथी की बात को मानकर मैंने यह सब लिख दिया, पुन पर्व मन सकुचा रहा है कि प्रो. विनय जी विनयशील सुख्यात विद्वान् हैं। मैं उनसे बहुत वरिष्ठ हूँ तथा उनके अध्यापकों की श्रेणी में आता हूँ। आपस में हमारा सुदृढ़ आदर-प्रेम भाव भी है। मैं विनय जी के व्यक्तित्व का प्रशंसक भी हूँ तथा यह भी मानता हूँ कि कोई छोटा या बड़ा विद्वान् हो, यदि उनकी बात आपको ठीक नहीं लगती है तो सम्मान एवं प्रेमपूर्वक आपको उसका उत्तर देना चाहिए। सम्बन्ध अलग चीज है तथा सिद्धान्त अलग चीज है। लिखने में सौहार्द बना रहे, कटुता या व्यक्तिगत आक्षेप न हों। आशा है कि अन्य विद्वान् भी इस विषय में कुछ लिखेंगे। यह आर्यसमाज के नियम की व्याख्या का प्रश्न है।

-बी-२६६, सरस्वती विहार, दिल्ली।

*** निवेदन ***

कीर्तिशेष आचार्य धर्मवीर जी ने अपने दानदाताओं के सहयोग से ऋषि उद्यान में निरन्तर चलने वाले ऋषि लंगर की व्यवस्था की थी, जो सतत संचालित हो रही है। इसमें ऋषि उद्यान की वृहद् भोजनशाला में **ऋषि उद्यान में निवास करने वाले योगसाधकों, संन्यासियों-वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों व आचार्यों के भोजन, दुग्ध, फल इत्यादि की व्यवस्था की जाती है।**

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों, विद्वानों, दर्शनार्थियों इत्यादि के निवास तथा भोजनादि की व्यवस्था इसके अन्तर्गत संचालित की जाती है।

आर्य दानदाता-परिवारों के सहयोग से ही यह अतिथि-यज्ञ सम्भव हो पा रहा है। अत: हम सभी आर्य परिवारों का दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि हम इस यज्ञ में होता बनकर निरन्तर दान-रूपी आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। विभिन्न संस्कारों एवं अन्य शुभावसरों पर अपनी दान-रूपी आहुति देना न भूलें, ताकि यह लोकोपकारी अतिथि यज्ञ निरन्तर चलता रहे।

इस अतिथि यज्ञ हेतु आप **५१००/-(पाँच हजार एक सौ रुपये) प्रतिवर्ष** भेजकर अपना सहयोग प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

ओम्मुनि
प्रधान

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री

जब तक सबकी रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्ष सुख से अधिक कोई सुख है।

महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

ज्ञानसूक्त - १८

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्या

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद १०/७१ 'ज्ञानसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।

-सम्पादक

यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पंथाम्।।

हम ऋग्वेद के ज्ञानसूक्त पर चर्चा कर रहे हैं। यह ऋग्वेद के १०वें मण्डल का ७१वाँ सूक्त है। इसके ५ मन्त्रों की चर्चा हम पीछे कर चुके हैं, जिनमें ज्ञान की प्रशंसा की गयी है। इन सभ मन्त्रों का ऋषि बृहस्पति है और मन्त्रों का देवता ज्ञान है। आज जिस मन्त्र पर हम विचार कर रहे हैं, वह इस प्रकार से है- यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पंथाम् इस मन्त्र की शब्दावली कह रही है कि मान लो किसी तरह से हमें ज्ञान प्राप्त नहीं है, तो हमें ज्ञानियों का साथ प्राप्त होना चाहिए, ज्ञानियों का मार्गदर्शन प्राप्त होना चाहिए। हारे यहाँ जो सत्संगति को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है उसका सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि जो चीज हमने पढ़ी नहीं है, अनुभव नहीं की है, किन्तु दूसरों के अनुभव से, अध्ययन से, हम लाभान्वित होते हैं। उस सत्संगति से हम वो लाभ अनायास सहज पा लेते हैं जहाँ तक हमारी अपनी पहुँच नहीं है। इसलिए मनुष्यों में ज्ञान का जो आदान-प्रदान होता है उसमें एक मनुष्य दूसरे को अपनी वाणी से, अपने विचार से अज्ञान से हटाकर ज्ञान की ओर ले जा सकता है। यहाँ पर कहा कि यदि कोई व्यक्ति ज्ञानी को, ज्ञान रूप विचार को अपने साथ नहीं रखता है तो वह बड़ा अपना नुकसान करता है, हानि करता है। कहा कि ज्ञान तो बिल्कुल ऐसा है जैसे कोई मित्र या सखा होता है। इसलिए विद्या के बारे में हमारे संस्कृत साहित्य में बड़ी सुन्दर पंक्ति है कि विद्या तो ऐसा धन है, ऐसी सम्पत्ति है जो सदा हमारे लिए लाभदायक ही होती है। वो ज्ञान हम जितना बाँटते हैं उतना बढ़ता है। सामान्य धन तो बाँटने से, देने से घटता है, छीनकर कोई ले जाता है तो कम हो जाता है लेकिन विद्या के साथ ज्ञान के साथ ऐसा नहीं है। विद्या का, ज्ञान का धन बड़ा महत्त्वपूर्ण है, इसके अध्ययन से, जितनी बार करते हैं उतना यह मजबूत होता है और कहा न चौरहार्यम्, विद्या के धन को चोर नहीं चुरा सकते यह वस्तु रूप नहीं है, व्यक्ति की बुद्धि में रहने वाला धन है। आगे कहा- न चराज हार्यम्। न भ्रातृ भाज्यम्, न च भारकारी। धनों की सबसे बड़ी विचित्रता है कि कोई भी धन हो, चाहे भूमि हो, सम्पत्ति व्यापार की हो, सोने-चाँदी के रूप में हो या किसी और वस्तु के रूप में हो उन सारी सम्पत्तियों को कोई दूसरा व्यक्ति नुकसान पहुंचा सकता है, उनमें कमी ला सकता है, उन्हें छीन कर ले जा सकता है। वो राजा भी छीन सकता है और चारे भी चुरा सकता है और तो और जब कोई सम्पत्ति हमने अपने पिता की प्राप्त होती है, मिलकर कमाई जाती है, लोग इकट्ठे होकर जब उसको कमाते हैं, तो उसको बाँटना पड़ता है। चोर

के ले जाने पर निर्धन हो जाते हैं। इसके लिए नीतिकार कहता है कि और कोई भी सम्पत्ति आप इकट्ठी करते हैं तो उसका भार आप पर पड़ता है। कोई व्यक्ति सोना ही इकट्ठा कर ले तो एक सीमा के बाद वो उसे ले जा नहीं सकता। तो धन को राजा ले जा सकता है, चोर ले जा सकता है, भार हो जाए तो खुद उठाया नहीं जा सकता है। उसे यदि हम बाँटते हैं, देते हैं तो हमारे धन में कमी आती है। नीतिकार ने आगे की पंक्तिलिखी कि विद्या का धन इन सब दोषों से मुक्त होत है। ज्ञान रूपी जो धन है वह इन सब परेशानियों से हट कर होता है, अलग होता है। नीतिकार ने आगे लिखा- व्यये कृते वर्धते हि नित्यम्, विद्या धनम् सर्व धन प्रधानम्। यह धन चोरों द्वारा हरा नहीं जा सकता है, कोई भाई व्यापार में हिस्सेदार, इस धन को बाँटकर हमसे ले नहीं सकता है सामान्य धन जहाँ व्यय करने पर समाप्त हो जात है कम हो जाता है, उसके स्थान पर जो विद्या का, ज्ञान का धन है, उसको आप जितना बाँटते हो जिना लोगों को बताते हो, उससे उसमें वृद्धि ही होती है कमी नहीं होती। वो नए रूप से आपको याद हो जाता है, नए कुछ अनुभव उसमें जुड़ जाते हैं, वो पहले से अधिक स्पष्ट हो जाता है, लेकिन उसमें किसी तरह की न्यूनता नहीं आती और यह एक दिन की बात नहीं है। ज्ञान को यदि आप रोज पढ़ायेंगे, सुनायेंगे तो प्रतिदिन व्यय करने पर भी उसकी निरन्तर वृद्धि होती जाएगी इसलिए सब धनों विद्या रूपी जो धन है, वो सबसे उच्च होता है। यही आशय इस मन्त्र में भी दिया गया है।

मन्त्र कहता है- यस्ति व्याज सचिविदम् सखाय कोई व्यक्ति यदि अपने साथ रहने वाले ज्ञानी व्यक्ति की उपेक्षा कर देता है। अपने को सुख और सहयोग देने वाले व्यक्ति की उपेक्षा करता है तो उसे फिर वाणी का कोई लाभ नहीं मिलता। हमें वाणी का लाभ प्राप्त करने के लिए जो विद्वान् लोग है उनका साथ करना पड़ता है, उनकी संगति करनी पड़ती है, उनकी सेवा-सतकार करना पड़ता है, उनसे प्रार्थना करनी पड़ती है, तब वह ज्ञान हमें प्राप्त होता है। गीता में लिखा है- तत् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानम् ज्ञानिन स्तत्त्वदर्शिन:। हम किसी से यदि कोई ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं ते हमें उस व्यक्ति के प्रति नम्र रहना होगा, जिज्ञासु रहना पड़ेगा, उन्हें हमारी सेवाओं का लाभ देना पड़ेगा। तब जो ज्ञानी लोग है, वे हमें अपने ज्ञ्क का लाभ देते हैं। इसलिए प्रणिपात से, परिप्रश्न से और सेवा से हम उस ज्ञान को पा सकते हैं, उसक लाभ उठा सकते हैं। तो संसार में, मनुष्य स्वयं ज्ञानवान न हो किन्तु वह ज्ञानियों को अपने पास रखकर के उसका लाभ उठा सकता है और उठाता है।

आप जितने भी बड़े-बड़े उद्योगपति हैं, व्यवसायी हैं कारखाने के मालिक हैं वो उन लोगों को अपने पास रखते हैं जो उन विषयों के जानकार है, विशेषज्ञ हैं। उन्हें मैनेजर के रूप में देखते हैं तकनीक जानने वालों को इंजीनियर के रूप में रखते हैं, व्यवस्था या प्रशासन के रूप में रखते हैं। अर्थात् उनकी बुद्धि का उपयोग करते हैं और उनकी बुद्धि से, ज्ञान से लाभ उठाते हैं। हम स्वयं ज्ञानी नहीं हैं तो भी हम अपने साथी के ज्ञान से हम उस ज्ञान का भरपूर उपयोग कर सकते हैं, लाभ प्राप्त कर सकते हैं, सम्पत्ति अर्जित कर सकते हैं।

इसलिए मन्त्र में कहा गया है- यस्ति व्याज सचिविंद सखाय विद्या का जो जानकार है, भली प्रकार समझने वाला है उस ज्ञानी को, मित्र को यदि हम दूर हटा देते हैं, उसकी बात नहीं सुनते हैं तो फिर हमं ज्ञान का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। 'न तस्य वाच्यति भागो अस्ति' तो फिर उसको वाणी से बोलना भी बेकार है। वाणी का भी भागीदार वह नहीं बनता शब्दों का भी भागीदार नहीं बनता। जिसकी चर्चा सुन रहा है उसका भी लाभ नहीं उठा सकता। वह जो लाभ देने वाला विद्वान् मित्र है, क्योंकि उसकी वह उपेक्ष कर रहा है। वाणी मात्रा में भी उसका कोई लाभ नहीं है। उसको जो लाभ प्राप्त होना

चाहिए वह भी नहीं है। क्यों?

यदीं शृणोत्यलकं शृणोति यदि वह ज्ञान से प्रेम नहीं रखता, ज्ञानियों के बीच में नहीं रहता, ज्ञनियों से लाभ उठाने की इच्छा नहीं रखता तो वह सुन भी रहा होतो उसका सुना हुआ व्यर्थ है, निरर्थक है। वह सुनता भी है तो झूठा ही सुन रहा है, सुनने का उसे कोई वास्तविक लाभ या परिणाम प्राप्त नहीं हो रहा है। क्यों- 'नहि प्रवेद सुकृतस्य पंथाम्' का जो प्रमुख उद्देश्य है या ज्ञान का जो प्रयोजन है, वह है उचित मार्ग का पता करना उचित मार्ग का ज्ञान करना और उस ज्ञान के लिए वेद मन्त्र में एक शब्द आया है 'सुकृतस्य पंथाम्।' जो चीज हम करन चाहते हैं, वो सुकृत होना चाहिए। करती तो दुनिया है, चोर भी कर रहा है, डाकू भी कर रहा है, जेब काटने वाला भी कर रहा है, ठग भी कर रहा है। कर तो सारे ही रहे हैं। लेकिन इन सबका जो किया हुआ है वह सुकृत नहीं है। वह अच्छा, श्रेष्ठ नहीं है। उसका जीवन कोई कल्याण या लाभ देने वाला नहीं है। इसलिए मन्त्र में कहा- यदीं शृणोत्यलकं शृणोति उसने जो ज्ञान पाय है, वह व्यर्थ है। नहि प्रवेद सुकृतस्य पंथाम्। वह उस सुकृ का जो पंथ है, रास्ता है, मार्ग है उसको 'न वेद' वह जान नहीं रहा है। यदि वह इस ज्ञान के परिणाम को, प्रयोजन का समझ सकता, तो वह कभी भी अपने साथियों से, ज्ञानवानों से द्वेष नहीं करता। ज्ञान से अज्ञानी लोग सदा द्वेष करते हैं, उनके प्रति घृणा करते हैं। उनकी जो श्रेष्ठता है उसे स्वीकार करने की उनके मन में इच्छा नहीं रहती। इसलिए जो अयोग्य व्यक्ति या अपात्र व्यक्ति को ज्ञान नहीं देना चाहिए, क्योंकि यद अपात्र व्यक्ति को कोई ज्ञान दिया गया तो वह ज्ञान का सदुपयोग से बचने के लिए वेद ने कहा कि आपको इस ज्ञान को प्राप्त करके जीवन में सुकृत की ओर बढ़ना है। लोग कहते हैं कि कोई गलत काम हो जाए तो लोग कहते हैं कि भाई पढ़ा-लिखा हो कर ऐसा काम क्यूँ करता है, तू इतना समझदार है- जानकार है फिर ऐसा क्यूँ करता है? इंजीनियर है कि डॉक्टर है कि प्रोफेसर है, इतना सब जानकर ऐसा क्यूँ करता है?

तो इसका एक मतलब सीधा सा निकलता है कि अच्छा करना ज्ञान से सम्भव है और जो ज्ञानवान नहीं है, ज्ञान का आदर नहीं करता है या ज्ञानवान लोगों के साथ नहीं रहता है वह सुकृत का प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकता इसलिए वेद कहता है 'न हि प्रवेद सुकृतस्य पंथाम्।' जो सुकृत का मार्ग है वो उसे नहीं जान पाता है। इसलिए वेद को पढ़ने से जो मनुष्य है, वो अपने जीन का उचित और ठीक मार्ग, जिसे वेद की भाषा में 'सुकृत' कहा गया है, उसको वह जान लेता है। ज्ञानियों के साथ रहन से वह उस सुकृत का पहचान लेता है और उस सुकृत के मार्ग पर चलने का यत्न करता है। मनुष्य ऐसा न करे यह तभी सम्भव है जब उस ज्ञान नहीं होता है। इसलिए वेद कहता है सुकृतस्य पंथाम्। जो सुकृत है, उसके मार्ग पर ज्ञानी व्यक्ति चलता है।

आर्य संस्थाओं से आग्रह

आर्य समाज एवं अन्य आर्य संस्थाएं अपने निर्वाचन, वार्षिकोत्सव और योग शिविर आदि आयोजन के संक्षिप्त समाचार परोपकारी में प्रकाशनार्थ भिजवा सकते हैं।

वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

महामहोपाध्याय पं. श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी की ११५वीं जयन्ती पर विशेष

स्वामी करपात्री जी, श्री निरञ्जनदेव तीर्थ तथा श्री युधिष्ठिर मीमांसक का शास्त्रार्थ

डॉ. जवलन्त कुमार शास्त्री

वेद-व्याकरण-मीमांसा शास्त्र के लोकविश्रुत विद्वान् पं. श्री युधिष्ठिर मीमांसक का शास्त्रीय लेख परिमाण और गुणवत्ता दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। कुछ दिनों से कतिपय पौराणिक पण्डितम्मन्य यह प्रवाद फैलाने में लगे हुए हैं कि स्वामी करपात्री जी से कोई आर्यविद्वान् नहीं जीत सका, यहाँ तक कि मीमांसक जी भी उनके समक्ष मौन साध गये थे। 'परोपकारी' के मान्य सम्पादक डॉ. वेदपाल जी ने भी जिज्ञासा प्रकट की- 'क्या मीमांसक जी का करपात्री जी से शास्त्रार्थ हुआ था? अत: मैंने इस प्रश्न, प्रवाद और जिज्ञासा के शमनार्थ ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक सामग्री पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।'

अमृतसर में पौराणिक विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ- मीमांसक जी की आत्मकथा में तत्क्षम्बद्ध स्थल इस प्रकार है- ''श्री स्वामी करपात्री जी के प्रयत्न से प्रति तीसरे वर्ष अर्थात् एक वर्ष छोड़कर सर्ववेदशाखा सम्मेलन का आयोजन विभिन्न स्थानों पर होता रहा है। श्री स्वामी करपात्रीजी को ओर से मुझे इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए सन् १९६० से निमन्त्रण प्राप्त होता रहा है और मैं इसमें सम्मिलित होता रहा हूं। सन् १९६४ के नवम्बर मास की ११-१८ तारीख तक 'सववेदशाखासम्मेलन' अमृतसर में हुआ। उसमें भी मुझे निमन्त्रित किया गया। मैं इस सम्मेलन में पढ़ने के लिये पूर्ववत् एक निबन्ध लिख कर ले गया। मैंने पूर्व ही लिख दिया था कि मैं अन्तिम दो दिनों में उपस्थित हो सकूंगा। तद्नुसार मैं वहां १६ की सायं उपस्थित हुआ।

अमृतसर सम्मेलन का वैशिष्ट्य- अमृतसर सम्मेलन से पूर्व श्री पं. चन्द्रशेखर जी शास्त्री संन्यास लेकर 'निरञ्जनदेव तीर्थ' के नाम से पुरी की 'शङ्कराचार्य पीठ' पर आसीन हो चुके थे। ये सदा से ही करपात्रीजी के विशिष्ट सहयोगी रहे हैं। अमृतसर पौराणिकों एवं आर्यसमाजियों का गढ़ रहा है। अत: यहां आर्यसमाजी विद्वानों को पराजित करने की विशेष योजना बनाई गई। इसकी सफलता के लिये श्री स्वामी निरञ्जनदेव तीर्थ ने अपना प्रथम चातुर्मासा अमृतसर में किया।

श्री स्वामी करपात्री जी अत्यन्त व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। उन्होंने अमृतसर के आर्यसमाज के अधिकारियों को बुलाकर कहा कि आप इस सम्मेलन में सम्मिलित होने योग्य अपने विद्वानों की पूर्ण पते सहित सूची हमें देवें। हम उन्हें मार्ग व्यय भी देवेंगे। आर्यसमाज के अधिकारियों ने सूची बनाकर दे दी। ये लोग इस सम्मेलन के अन्त: गूढ अभिप्राय को न समझ सके। श्री करपात्री जी ने सूची में निर्दिष्ट पण्डितों को निमन्त्रण भेजा, परन्तु कोई भी आर्यविद्वान् सम्मेलन में उपस्थित नहीं हुआ। ११-१२ सितम्बर तक किसी आर्यसमाजी विद्वान् के उपस्थित न होने पर और आर्यसमाज के अधिकारियों को इस सम्मेलन के गूढ़ अभिप्राय का परिज्ञान होने पर उन्होंने 'आर्यसार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, देहली' को तार भेजा और २-३ पण्डितों को भेजने के लिये लिखा, परन्तु १६ नवम्बर शाम तक कोई आर्यसमाजी विद्वान् उपस्थित नहीं हुआ।

मैं १६ नवम्बर की शाम को जब श्री करपात्रीजी को सूचित करने पाण्डाल में गया तो मुझे अनेक आर्यसमाजियों ने घेर लिया और वहां की स्थिति बताते हुए कहा कि अच्छा हुआ आप आ गये। हमने और आर्यविद्वानों के साथ-साथ आपका नाम भी थी करपात्रीजी को दिया

था। सारी परिस्थिति सुनकर मुझे अत्यन्त खेद हुआ और मैंने कहा कि मुझे श्री करपात्रीजी ने आपके द्वारा नाम देने पर नहीं बुलाया है। वे तो इससे पूर्व भी मुझे बुलाते रहे हैं और मैं उनके सम्मेलन में भाग लेता रहा हूं। रही शास्त्रार्थ की बात, सो आप जानें। मैं शास्त्रार्थ करने के लिये नहीं आया हूं। इसके अनन्तर करपात्रीजी से भी कह दिया कि मैं जो निबन्ध लिखकर लाया हूँ उसे हो पढ़ूँगा।

१७ तारीख को प्रात: जब सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई तो श्री करपात्री जी ने अकेला मुझे आया जानकर अपने पूर्व निश्चय के अनुसार शास्त्रार्थ के रूप में हो कार्य आरम्भ किया। काशी के एक पण्डित ने ऋषि दयानन्द की 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में आये गौ: पुश्निरक्रमीत् मन्त्र की व्याख्या को उद्धृत करके अपना पक्ष रखा- 'स्वामी दयानन्द ने पाश्चात्य मतानुसार पृथिवी का सूर्य के चारों ओर भ्रमण सिद्ध करने के लिये आये गौ: मन्त्र को उद्धृत किया है। मन्त्र में अयम् पुंल्लिङ्ग है और पृथिवी स्त्रीलिङ्ग है। इस कारण उनकी व्याख्या अशुद्ध है। आर्यसमाजी विद्वान् इसका उत्तर देवें। ऐसा कहकर बैठ गये। अमृतसर के आर्यसमाज के व्यक्तियों ने मुझे बहुत कहा कि आप उत्तर देवें।' मैं अमृतसर के आर्यसमाजियों की अव्यावहारिकता से अत्यन्त खिन्न था अत: मैंने कहा कि शास्त्रार्थ का आह्वान आर्यसमाजी विद्वानों ने किया है। में यहां शास्त्रार्थ के लिये नहीं आया हूँ। मैं चुपचाप बैठा रहा। पांच मिनट के पश्चात् पूर्व पण्डित ने पूर्वोक्त आक्षेप पुन: दोहराया और समाधान के लिये आह्वान किया। इस बार भी मैं बैठा रहा। पुन: तीसरी बार पूर्व आक्षेप को दोहराकर जब पण्डित ने कहा कि यदि कोई इसका समाधान प्रस्तुत नहीं करता है, तो समझा जायेगा कि स्वामी दयानन्द का लेख मिथ्या है। इला अन्तिम घोषणा पर मैंने उठकर कहा कि पृथिवी के भ्रमण की बात स्वामी दयानन्द के पाश्चात्य मत से प्रभावित होकर नहीं लिखी है। हमारे वैदिक ग्रन्थों को इसका बहु उल्लेख है। ज्योतिषाचार्य आर्यभट्ट ने अपने ग्रन्थ में इस पक्ष को अच्छी प्रकार उपस्थापित किया है। इसके साथ ही ब्राह्मण ग्रन्थों के भी प्रमाण दिये। स्वामी दयानन्द की व्याख्या पर जो आक्षेप किया था उसके उत्तर में कहा-प्रतीत होता है अपना पक्ष प्रस्तुत करने वाले विद्वान् ने स्वामीजी की व्याख्या देखी ही नहीं है, सुनी सुनाई बात के आधार पर शङ्का प्रस्तुत कर दी है। स्वामीजी ने इस मन्त्र की व्याख्या में लिखा है- पृथिव्यादिलोक:। इसमें अयम् पद से केवल पृथिवी का ही निर्देश नहीं है, अपितु पृथिव्यादि लोकों का निर्देश है। अत: पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग की बात कहकर जो दोषारोपण किया है यह मिथ्या है, बिना सोचे समझे किया गया है।

इसके अनन्तर शास्त्रार्थ आरम्भ हो गया। तारीख १७-१८ को प्रात: और मध्याह्नोतर की चार बैठकों में ९ घण्टे तक ऋषि दयानन्द के वेदविषयक अनेक मन्तव्यों पर संस्कृत में शास्त्रार्थ हुआ (सम्मेलन की सारी कार्यवाही संस्कृत भाषा में होती थी) अन्त में पुरी के शङ्कराचार्य श्री निरन्जनदेव तीर्थ ने कहा। यह शास्त्रार्थ नहीं है शास्त्र चर्चा है। 'श्री मीमांसक जी मेरे पूर्व आश्रम के मित्र हैं, बड़े विद्वान् हैं। हमने शास्त्र चर्चा की है इसमें जय-पराजय की भावना नहीं है'। इस प्रकार इस शास्त्रार्थ का पटाक्षेप हुआ। इस शास्त्रार्थ का विवरण अन्यत्र प्रस्तुत करने का विचार है। इस शास्त्रार्थ से घबराकर जो करपात्री जी मुझे अपने सर्ववेदशाखा सम्मेलन में बुलाते रहे थे, उन्होंने पुन: आगे से बुलाना बन्द कर दिया।

इस शास्त्रार्थ की कुछ विशेषताएं-

१-ऋ. द. के पक्ष का पोषक मैं अकेला व्यक्ति था। दूसरे पक्ष में अनेक विद्वान् थे जो बदल-बदल बोलते थे।

२- मेरे पास पूज्य गुरुवर विरचित यजुर्वेद-भाष्य विवरण के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं थी। दूसरे पक्ष की मेजों पर पचासों ग्रन्थ विद्यमान थे।

३- मेरे द्वारा स्थान निर्देशपूर्वक दिये गए उद्धरणों को उन-उन पुस्तकों में विपक्षी विद्वान् निकाल कर मिलाते

थे। दो-तीन बार तो ऐसा भी हुआ कि हड़बड़ा-हट में उन्हें मेरे द्वारा उद्धृत उद्धरण न मिलने पर पुस्तक मंगाकर और उस स्थान पर निकाल कर दिखाया।

४- पौराणिक विद्वान् प्रायः वैदिक पदों की स्वर प्रक्रिया को नहीं जानते हैं, अतः मैं यत्र-तत्र प्रसंगवश स्वर प्रक्रिया पर बल देता था। इस पर श्री स्वामी निरञ्जनदेव जी ने आर्यसमाजियों की प्रमुख कमी ध्यान में रखकर कहा- 'मीमांसक जी बार-बार स्वर पर बल देते हैं, परन्तु किसी वेद के एक मन्त्र का तो सस्वर पाठ सुना देवें।' यह आर्यसमाजी विद्वानों की वेदविषयक महती उपेक्षा पर एक करारी चोट थी। इस पर मैंने कहा- 'आज मैं एक मन्त्र का भी सस्वर पाठ नहीं कर सकता तो इसमें मेरा दोष नहीं है, आपके समाज का है। मैंने सामवेद का सस्वर पाठ सीखने का प्रयत्न किया था। आप लोगों के मन्तव्यानुसार जन्मना ब्राह्मण होने पर भी आर्यसमाजी होने से मुझे नहीं पढ़ाया (द्र. पूर्व पृष्ठ १५७)। यदि आपके मतावलम्बी अन्य गुरुजनों के सदृश ये सामवेदी अध्यापक भी उदार होते तो मैं वेद के सस्वर पाठ ज्ञान से वञ्चित न रहता।

५- इसी प्रकार पौराणिकों में पूर्व मीमांसा-शास्त्र के ज्ञाता भी विरले ही हैं।[१]

अतः मैंने अपने कथ्य के प्रमाण में मीमांसा-शास्त्र का बहुधा आश्रय लिया और सभा में विद्यमान मीमांसा-शास्त्रज्ञ अपने गुरुभाई श्री पं. सुब्रह्मणम शास्त्री जी की ओर संकेत करके कहता था कि यदि मैंने कुछ शास्त्र विपरीत कहा हो तो मेरा समाधान कर देवें। मीमांसा-शास्त्र का अनेक बार उल्लेख करने पर श्री स्वामी करपात्री जी ने श्री पं. सुब्रह्मण्य शास्त्री को ४-५ बार बुलाकर मेरा प्रतिवाद करने को कहा। अतः मेरा कथन मीमांसा-शास्त्र के अनुकूल था, इसलिये उन्होंने कहा कि जब तक मीमांसा-शास्त्र के सिद्धान्तों के विपरीत नहीं बोलते मैं प्रतिवाद कैसे कर सकता हूँ। यह बात माननीय शास्त्रीजी ने मुझे अगले दिन बताई थी और यह भी कहा था कि ये लोग हम दोनों गुरुभाइयों की लड़ाकर तमाशा देखना चाहते थे।

वेद-संज्ञा-विषयक एक अन्य लक्षण पर विचार

नवम्बर सन् १९६४ की १२ से १८ तिथियों में अमृतसर नगर में स्वामी करपात्री जी के तत्वावधान और पुरी के शंकरपीठ के आचार्य स्वामी निरन्जनदेव जी के सभापतित्व में सर्ववेदशाला सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उसमें तारीख १६-१७-१८ तक 'वेद में विज्ञान है या नहीं', तथा 'ब्राह्मणग्रन्थों की वेदसंज्ञा है या नहीं', इन दो विषयों पर शास्त्रचर्चा हुई थी। इसमें सनातन धर्मावलम्बी विद्वानों और महात्माओं का पक्ष था- ''वेद में विज्ञान नहीं, और ब्राह्मणग्रन्थों की भी वेदसंज्ञा है।'' इसके विरोध में मेरा पक्ष था- ''वेद में विज्ञान का ही प्राधान्येन प्रतिपादन है और मन्त्र संहिताओं की ही वेदसंज्ञा है, ब्राह्मण ग्रन्थों की वेदसंज्ञा नहीं है।'' इस शास्त्रचर्चा में मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् सूत्र पर तो विचार हुआ ही था, पर मेरे आरोपों का उत्तर न दे सकने पर वेदसंज्ञा-विषयक एक नया लक्षण प्रस्तुत किया गया। उसे भी हम यहां उद्धृत करके उसकी मीमांसा करते हैं-

कुछ विद्वान् ब्राह्मणग्रन्थों की वेदसंज्ञा सिद्ध करने के लिये वेद का निम्न लक्षण उपस्थित करते हैं-

'सम्प्रदायाविच्छिन्नत्वे सत्यस्मर्यमाणकर्तृत्वं वेदत्वम् इति।'

अर्थात्- पठनपाठनरूप गुरुशिष्य-सम्प्रदाय के विच्छिन्न ग होने पर भी जिसके रचयिता का ज्ञान न हो, यह 'वेद' कहाता है।

इस लक्षण के अनुसार वादी ब्राह्मणग्रन्थों की भी वेदसंज्ञा मानता है, क्योंकि जैसे मन्त्र संहिताओं के पठन-पाठन सम्प्रदाय के विच्छेद न होने पर भी उनके रचयिता का ज्ञान नहीं, उसी प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों के पठन-पाठन-रूप-सम्प्रदाय के विच्छेद न होने पर भी उनके रचयिता का नाम अज्ञात है। यदि कोई कहे कि ऐतरेय आदि ब्राह्मणग्रन्थों के रचयिताओं के ऐतरेय याज्ञवल्क्य आदि

नाम ज्ञात हैं, तो वादी कहता है कि ये रचयिताओं के नाम नहीं हैं, अपितु प्रवक्ताओं के नाम हैं। जैसे ऋग्वेदसंहिता का शाकल-संहिता नाम शाकल्य आचार्य के प्रवचन के कारण पड़ा, न कि रचयिता होने के कारण। इसी प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों के नामों के सम्बन्ध में भी समझना चाहिये।

उक्त लक्षण का खण्डन

वस्तुतः उक्त वेदलक्षण से भी ब्राह्मणग्रन्थों की वेदसंज्ञा सिद्ध नहीं की जा सकती, क्योंकि उक्त क्षण अतिव्याप्ति-अव्याप्ति दोष से दूषित है। यथा-

अतिव्याप्तिदोष- वैदिक वाङ्मय में ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनके पठनपाठन का उच्छेद तो नहीं हुआ, पुनरपि उनके रचयिताओं का नाम ज्ञात नहीं है। यथा माध्यन्दिन संहिता का पदपाठ। इस लक्षण के अनुसार ऐसे अज्ञात नामवाले पौरुषेय पद-ग्रन्थ की भी अपौरुषेयत्वरूप वेद-संज्ञा प्राप्त होती है, जो कि इष्ट नहीं। समस्त पदपाठ-संज्ञक ग्रन्थ पौरुषेय हैं, इसमें सभी प्रामाणिक आचार्य एकमत हैं। पुनरपि पदपाठ के पौरुषेयत्व-ज्ञापन के लिये तीन प्रमाण उपस्थित करते हैं-

१- वा इति च य इति च चकार शाकल्यः, उदात्तं त्वेवमाख्यातमभविष्यद्, असुसमाप्तश्चार्थः। निरुक्त ६/२८

निरुक्तकार यास्क ने वनेनवायोन्यमायि० (ऋ. १०/२९/१) मन्त्र में पठित 'वायः' को एक पद मानकर व्याख्या करके लिखा है कि- शाकल्य ने वायः में वा यः ऐसा दो पदरूप, विभाग किया है, वह अयुक्त है, क्योंकि यः पद का प्रयोग होने पर अधायि क्रिया को उदात्त होना चाहिये, क्योंकि यत् शब्द के योग में पद से परे भी क्रियापद अनुदात्त नहीं होता।

द्रष्टव्य- यद्वृत्तान्नित्यम् (अष्टा. ८/१/६६) स्वर-लक्षण।

यहां यास्क ने स्पष्टरूप में ऋग्वेद के पदपाठ को शाकल्यकृत अर्थात् पौरुषेय कहा है और उसमें दोष दर्शाया है।

२-न लक्षणेन पदकारा अनुवर्त्याः, पदकारैर्नाम लक्षणमनुवर्त्यम्। महाभाष्य ३,१,१०९; ६,१,२०७; ८,२,१६।

अर्थात्- लक्षणों (व्याकरण के नियमों) को पदकारों का अनुवर्तन नहीं करना चाहिये (उनके पीछे नहीं चलना चाहिये), अपितु पदकारों को लक्षणों (व्याकरण के नियमों) का अनुसरण करना चाहिये।

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने यह वचन ऐसे तीन स्थानों पर पढ़ा है, जहां पाणिनीय लक्षणों और पदकारों के पदविच्छेद में विशेष उपस्थित होता है। इस वचन से महाभाष्यकार के मत में पदपाठ पौरुषेय है, यह स्पष्ट है।

३-महाभाष्यकार के उक्त वचन की व्याख्या करता हुआ आचार्य कैयट (३/१/१०९ में) स्पष्ट लिखता है-

न लक्षणेनेति-संहिताया एव नित्यत्वं, पदच्छेदस्य तु पौरुषेयत्वम् इति।

अर्थात्- मन्त्रसंहिता ही नित्य अपौरुषेय है, पदपाठ पौरुषेय अर्थात् अनित्य है।

अव्याप्तिदोष-उक्त वेदलक्षण में अव्याप्ति दोष भी है। जिन ऐतरेय आदि ब्राह्मणग्रन्थों की वादी इस लक्षण से वेदसंज्ञा सिद्ध करना चाहता है, उनमें से अनेक ब्राह्मणग्रन्थों की उक्त लक्षणानुसार वेदसंज्ञा सिद्ध नहीं होती। इसका कारण यह है कि ऐतरेय आदि अनेक ब्राह्मणग्रन्थों के सम्प्रदाय का विच्छेद हो चुका है। इसमें प्रमाण यह है कि ऐतरेय आदि अनेक ब्राह्मणग्रन्थों में सम्प्रति स्वरचिह्न उपलब्ध नहीं होते। प्राचीनकाल में सभी ब्राह्मणग्रन्थ सस्वर थे। ऐसी अवस्था में सस्वर ब्राह्मणग्रन्थों से स्वरों का नाश पठनपाठन-सम्प्रदाय के विच्छिन्न होने पर ही उत्पन्न हो सकता है। अन्यथा स्वरनाश का और कोई कारण नहीं माना जा सकता। यतः ऐतरेय आदि कतिपय-ब्राह्मणों में स्वरचिह्न उपलब्ध नहीं होते, अतः इसके पठन-पाठनरूप सम्प्रदाय का उच्छेद हुआ है, यह

स्पष्ट है। पठनपाठन सम्प्रदाय के उच्छेद होने पर स्वररहित ब्राह्मणग्रन्थों की वेदसंज्ञा (=जो वादी को अभिमत है) उक्त लक्षणानुसार उपपन्न नहीं हो सकती।

ऐतरेय आदि ब्राह्मणग्रन्थ पुराकाल में सस्वर थे। इसमें निम्न प्रमाण है-

१- पाणिनीय व्याकरण से ज्ञात होता है कि पुराकाल में वैदिकी वाक् के समान लौकिक भापा भी सस्वर व्यवहृत होती थी। इसमें हम केवल दो प्रयास उपस्थित करते हैं-

क- दत्त और गुप्तसंज्ञक व्यक्तियों द्वारा व्यास नदी के उत्तर तट पर बनाये कूपों के लिये दात्त गौप्त शब्दों में आद्युदात्त स्वर का प्रयोग बतलाने के लिये पाणिनि ने उदक् च विपाशः (४/१२/७३) सूत्र द्वारा अञ् प्रत्यय का विधान किया है। इसी विशेष विधान से व्यास के दक्षिण किनारे पर दत्त गुप्त द्वारा निर्मित कूपों के लिये अन्तोदात्त गौप्त पर प्रयुक्त होते थे, यह ज्ञपित होता है। इसी दृष्टि से काशिकाकार ने लिखा है-

'उदगिति किम्-दक्षिणतो विपाशः कूपेष्वणेव दात्त गौप्त स्वरे विशेषः। महती सूक्ष्मेक्षिका वर्त्तते सूत्रकारस्य।।'

अर्थात् विपाशा के दक्षिण कूपों के लिये व्यवहृत दात्त गौप्त शब्दों में अण प्रत्यय ही होगा। दोनो में स्वर का भेद है। सूत्रकार पाणिनि की दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म है, उसने स्वरभेद की भी उपेक्षा नहीं की।

ख- पञ्चभिः सप्तभिः आदि पदों में वेद में विभक्ति से पूर्ववर्ती स्वर (अच्) उदात्त होता है, परन्तु लौकिक भाषा में कभी विभक्ति में भी उदात्तत्व देखा जाता है, तो कभी उससे पूर्ववर्ती अच् में। अतः पाणिनि ने लौकिक भाषा में उपलब्ध होनेवाले स्वरभेदको दर्शाने के लिये विभाषा भाषायाम् (६/१/१८१) यह विशेष सूत्र बनाया।

हम रोगों उद्धरणों से स्पष्ट है कि पाणिनि के समय में लोकभाषा भी वैदिकी वाक् के समान सस्वर थी। अनेक लौकिक भाषा के ग्रन्थ मनुस्मृति या यास्कीय निरुक्त के सस्वर होने के प्रमाण उपलब्ध होते हैं।[२] जब लौकिक भाषा और लौकिक ग्रन्थ भी सस्वर थे, तब ब्राह्मणग्रन्थों के सस्वर होने का को प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। अर्थात् ब्राह्मणग्रन्थों का स्वरविरहित प्रवचन नहीं हो सकता था।

२-मीमांसासूत्रकार जैमिनि ने कल्पसूत्राधिकरण में 'कल्पसूत्र' आम्नाय के समान प्रमाण नहीं है, इसके लिये हेतु दिया है -नासन्नियमात् (१/३/१२)। अर्थात् कल्पसूत्रों की रचना आम्नाय के समान निबद्ध नहीं है। शबरस्वामी ने असन्न्यिमात् हेतु का अर्थ करते हुये लिखा है- 'नैतत् सम्यङ् निबन्धनम्, स्वराभावात्।' कल्पसूत्रों की रचना सम्यक् निबद्ध नहीं है, क्योंकि उसमें स्वरनिर्देश नहीं है। समस्त सूत्र ग्रन्थ एकश्रुतिरूप से पढ़े गये हैं, यह समस्त प्राचीन आचार्यों का मत है।

जैमिनि के इस सूत्र से भी स्पष्ट है कि ऐतरेयादि सभी ब्राह्मण पुराकाल में सस्वर थे। अतः वर्तमान में अधिकांश ब्राह्मणों में स्वर का अभाव होना, उनके सम्प्रदाय-विच्छेद का ही द्योतक है।

इतने पर भी यदि कोई यही हठ करे कि ऐतरेय आदि ब्राह्मण आदिकाल से स्वररहित ही थे, उस अवस्था में जैमिनि के उक्त सूत्र के अनुसार स्वररहित कल्पसूत्रों का जैसे आम्नायवत् प्रामाण्य नहीं, उसी प्रकार स्वररहित ब्राह्मणग्रन्थों का भी प्रामाण्य नहीं होगा। दोनों में से एक बात अवश्य स्वीकार करनी होगी। दोनों में से किसी भी एक बात को स्वीकार करने पर, वादी के मतानुसार स्वररहित ब्राह्मणों का वेदत्व, अथवा तद्वत्प्रामाण्य सिद्ध नहीं हो सकता।[३]

पाद टिप्पणी :

१. दिल्ली में सम्पन्न एक सर्ववेदशाखा सम्मेलन में एक बार म. म. श्री पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने 'वेद में इतिहास' के निरूपण में व्याख्यान दिया और उसमें प्रबल प्रमाण के रूप में मीमांसा के 'लोकवेदाधिकरण' के 'य एव लौकिकाः शब्दास्तएव वैदिकाः त एव च तेषामर्थाः' पक्ष को उद्धृत करके कहा कि जब लोक में वसिष्ठ

विश्वामित्र व्यक्तिवाचक हैं तो वेद में भी इनका यही अर्थ होगा। व्याख्यान के अन्त में मैंने उठकर आदर एवं नम्रतापूर्वक कहा कि 'मीमांसा में लोक वेदाधिकरण में जातिवाचक गुणवाचक भौर क्रियावाचक शब्दों पर ही विचार किया है, रूढ़ शब्दों को स्वीकार नहीं किया है। यह कहकर पूज्य गुरुवार चिन्नास्वामीजी शास्त्री के गुरुभाई श्री विद्वद्वर अनन्तकृष्णजी शाल्वी, जो संन्यस्त अवस्था में वहां विराजमान थे, उनकी ओर संकेत करके कहा कि ये हमारे पूज्य मीमांसा शिरोमणि जी विराजमान हैं, वे निर्णय देवें कि मैंने सही कहा है या नहीं? इस पर शास्त्रीजी ने कहा- मीमांसकेन यदुक्तं तत्सत्यम्, नहि तत्र रूढशब्दानां विचारः कुतः।

२. द्रष्टव्य- वैदिक-स्वर-मीमांसा, पृष्ठ ४७-४८ (द्वि.सं.)

३. तान एवाङ्गोपाङ्गनाम्। प्रतिज्ञा-परिशिष्ट (यजुःप्रातिशात्य सम्बद्ध) ३/२८।।

क- आत्म-परिचय, युधिष्ठिर मीमांसक, प्रथम संस्मरण, १९८८, पृष्ठ २२५-२२९ तक। प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, देवली (सोनीपत-हरयाणा)

ख- आचार्य- शबरस्वामि- चिरचितम्

जैमिनीय-मीमांसा-भाष्यम्

आर्षमत-विमर्शिन्या हिन्दी-व्याख्या सहितम्। प्रथमो भागः, व्याख्याकारः - युधिष्ठिरो मीमांसक, पृष्ठ-८६-८९ तक।

द्वितीय संस्करण, १९८७ ई.। प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट (सोनीपत-हरयाणा)

संसार की अद्भुत पुस्तक - सत्यार्थप्रकाश

वैचारिक क्रान्ति के लिए व यथार्थ ज्ञान-विज्ञान तथा सत्य, धर्म, न्याय, मानवता, अन्धविश्वासआदि विषयों की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने हेतु तथा जीवन में उत्साह, स्वाभिमान, शुद्धता व आत्मिक शान्ति की प्राप्ति के लिए अवश्य पढ़ें?

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्म-जयन्ती शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में ५० प्रतिशत की छुट

पुस्तक का नाम	वास्तविक मूल्य रुपये
विवाह पद्धति	२०
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	०२
वेदान्तिध्वान्त निवारण	०२
समाधी	१००
सामवेद शतक	३०
जिज्ञासा विमर्श	१००
इतिहास प्रदूषण	१००
इतिहास साक्षी	५०
वेदामृत	५०
सत्यासत्य निर्णय	२५
The Book of Prayer	35
Kashi Debate	20
A Critique of Swami Naryan Seet	20
An Examination of Vallabh Seet	20
Five Great Rituals of The Day	20
Bhramaccheden	25
Bhranti Nivarana	35
Atmakatha	20
Gokarunanidhi	12
Dayanand Interparetation of Vedas	05
संध्या सुरभि कलेण्डर	३५
महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ कलेण्डर	२५
The Pre Islamic Religious of Arabia	20
वेदमाता	१००
शंका समाधान	७०
ईश्वर	१५०
नवयुग की आहट	६०
वैदिक इस्लाम	१०
पं. आत्माराम अमृतसरी	१००
इतिहास बोल पड़ा	१००
मृत्यु सूक्त	२००
सत्यार्थ सुधा	१५०

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-

दूरभाष-0145-2460120,चलभाष- 7878303382

संस्था समाचार

१- पूर्व प्रधान स्व. श्री गजानन्द जी आर्य के जन्मदिवस मनाया - पूर्व प्रधान स्व. श्री गजानन्द जी आर्य के जन्मदिवस पर उनकी धर्मपत्नी तारामणि जी की ओर से आयोजन किया गया।

आर्यसमाज अजमेर के श्री चाँदराम, श्री नवीन मिश्र व श्री चिरंजीलाल, नगर आर्यसमाज के श्री रमेशचन्द्र त्यागी व प्रधान जी आदि की उपस्थिति रही, श्री रामप्रसाद, श्री किशनसिंह गहलोत-गढी मालियान व श्री मनोहरसिंह, श्रीमती सूर्यकिरण व श्रीमती कुमुदिनी आर्य आदि की उपस्थिति रही। श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', ब्रह्मचारी नवनीत-ऋषि उद्यान उपस्थित रहे। प्रधान जी ने धन्यवाद व पर्व की बधाई दी कार्यक्रम का संचालन श्री वासुदेव आर्य ने किया। अन्त में प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

२- श्रावणी पर्व आयोजन- दिनांक १९ अगस्त को ऋषि उद्यान में श्रावणी पर्व का आयोजन किया गया साथ ही साथ संस्कृत दिवस एवं हैदराबाद के शहीदों का पुण्य स्मरण भी किया गया। परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओम्मुनि सहित शहर की अन्य समाजों से पधारे हुए आर्यपुरुषों ने भाग लिया। महिला व पुरुषों ने इस अवसर पर अपने गीतों की व विचारों की प्रस्तुति दी। श्रीमती सरोज मालू प्रान्तीय संचालिका आर्यवीर दल ने अपने विचार व गीत प्रस्तुत किया।

३- वार्षिक उत्सव - गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर, जिला जालन्धर, पंजाब का वार्षिक उत्सव ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर २०२४ तक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर यजुर्वेद यज्ञ , छात्रों हेतु वैदिक प्रतियोगिताएँ, स्नातक सम्मेलन, गुरु विरजानन्द सम्मेलन, योग शिविर आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम रहेंगे।

गुरुकुल परिवार आपको इस अवसर पर परिवार सहित सादर आमंत्रित करता है।

आपके आने से कार्यक्रम की शोभा बढ़ेगी और हमारा उत्साह वर्धन होगा।

-प्राचार्य, डॉ. उदयन आर्य, गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, जी टी रोड , करतारपुर

पाठकों की प्रतिक्रिया

आदरणीय डॉक्टर वेदपाल जी, सम्पादक परोपकारी पाक्षिक। श्रद्धेय डॉक्टर साहब अगस्त माह के उत्तरार्द्ध अंक के परोपकारी के सम्पादकीय को पढ़कर हृदय अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ। आपके द्वारा तार्किक एवं शास्त्रीय व्याख्या करते हुए स्वामी रामभद्राचार्य जी के अनर्गल प्रलाप का जो सटीक उत्तर दिया गया है। वह अत्यन्त प्रशंसनीय एवं आर्यसमाज का गौरव बढ़ाने वाला है। अपने दम्भी स्वभाव के कारण श्री रामभद्राचार्य निरन्तर किसी न किसी विषय पर अपने अपने ऐसे असैद्धान्तिक वक्तव्य देकर आत्ममुग्ध होते रहते हैं, परन्तु इससे समग्र समाज पर कितना विपरीत प्रभाव पड़ता है इसकी विचार उन्हें किंचित् मात्र भी नहीं है। आपका सम्पादकीय सम्भवत मात्र कुछ प्रबुद्ध आर्यजनों में ही प्रसारित हो पाएगा तथा इसका रामभद्राचार्य जी पर कोई प्रभाव नहीं होने वाला है, अतः आवश्यक है की आपके इस गवेष्णात्मक सम्पादकीय को उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए उनके संज्ञान में लाया जाए। इस सम्बन्ध में यह भी निवेदन है कि स्वामीरामभद्राचार्य जी को माण्डूक्य उपनिषद् पढ़ने का परामर्श दिया जाये। मैं मेरठ के समस्त आर्यजनों की ओर से इस आपका आभार व्यक्त करता हूं।

राजेश सेठी, प्रधान, आर्यसमाज थापर नगर, मेरठ

परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के २००वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में

भव्य एवं दिव्य ऋषि मेला समारोह

कार्तिक कृष्ण १ से तृतीया सम्वत् २०८१ तदनुसार १८, १९, २० अक्टूबर २०२४

विराट् व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की एकमात्र उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा, अजमेर एक भव्य एवं दिव्य समारोह का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर कई सम्मेलनों (यथा गोरक्षा सम्मेलन, वेद प्रचार सम्मेलन, सोशल मीडिया और आर्यसमाज, स्त्री शिक्षा सम्मेलन, युवा सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन) का आयोजन होगा।

कार्यक्रम स्थल- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

यजुर्वेद पारायण यज्ञ- का आरम्भ सोमवार १४ अक्टूबर से होगा व इसकी पूर्णाहुति समापन समारोह के अन्तिम दिन २० अक्टूबर को प्रातः १० बजे होगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री अहमदाबाद होंगे।

विशेष आकर्षण

१. इच्छुक व्यक्तियों को वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा। २. ऋषि के जीवन के ऊपर लेज़र शो।
३. ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रदर्शनियाँ। ४. संगठन का परिचय देने के लिए एक विशाल शोभा यात्रा।
५. वेद-कण्ठस्थीकरण की परीक्षा। ६. ऋषि दयानन्द के जीवन पर विशेष गोष्ठियाँ, नाटिकायें।
७. आर्य साहित्य एवं यज्ञादि के उपकरणों का विक्रय। ८. कार्यकर्त्ताओं तथा विद्वानों का सम्मान।

ऋषि लंगर- इस अवसर पर पधारने वाले श्रद्धालुओं के लिए पौष्टिक एवं स्वादिष्ट प्रातःराश तथा दोनों समय के भोजन की व्यवस्था परोपकारिणी सभा की ओर से होगी।

आवास-व्यवस्था- आप यदि समूह में रहना चाहेंगे तो ऋषि उद्यान तथा इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्यालयों, आर्यसमाजों एवं धर्मशालाओं में व्यवस्था की जायेगी। यदि आप अपने लिए अलग से कमरों की व्यवस्था करना चाहते हैं तो निम्न दूरभाषों पर कम से कम १५ दिन पूर्व सूचना दे दें ताकि होटलों में व्यवस्था की जा सके। आप अपने आने के लिए निम्नलिखित दूरभाष पर रजिस्ट्रेशन अवश्य करा लें ताकि आपके आवास में कोई कठिनाई न हो।

सम्पर्क सूत्र - १. श्री रमेशचन्द भाट - 9413356728, २. श्री दिवाकर गुप्ता - 7878303382

आप से निवेदन है कि आप इस अवसर पर अवश्य पधारें। ऐसा अवसर आप के जीवन में दूसरी बार नहीं आयेगा तथा सभी जन अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधारकर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें। महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा व उत्साह प्राप्त कर वेद धर्म के प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

इस महान् पर्व पर आर्यजगत् के अनेक प्रसिद्ध संन्यासी, मुनि, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक एवं राजनैतिक जगत् के कई महानुभाव पधार रहे हैं।

संन्यासी- १. स्वामी प्रणवानन्द, गुरुकुल गौतमनगर, देहली २. स्वामी डॉ. देवव्रत, संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल ३. स्वामी ब्रह्ममुनि, महाराष्ट्र ४. स्वामी ऋतस्पति, गुरुकुल होशंगाबाद ५. स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक ६. स्वामी चिदानन्द सरस्वती, गुरुकुल निगम नीडम्, तेलंगाना ७. स्वामी विदेह योगी, कुरुक्षेत्र ८. स्वामी सच्चिदानन्द, राजस्थान ९. आचार्य विजयपाल, गुरुकुल झज्जर १०. आचार्य ऋषिपाल, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ।

आमन्त्रित राजनैतिक व्यक्तित्व- १. आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात राज्य २. श्री भजनलाल शर्मा, मुख्यमन्त्री राजस्थान ३. श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, केन्द्रीय संस्कृति मन्त्री ४. श्री वासुदेव देवनानी जी, अध्यक्ष विधानसभा राजस्थान ५. श्री घनश्याम तिवारी, राज्यसभा सांसद ६. श्रीमती अनिता भदेल, विधायक एवं पूर्व मन्त्री, अजमेर।

विद्वान् एवं विदुषी- १. प्रो. कमलेश शास्त्री, अहमदाबाद २. प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब ३. डॉ. रघुवीर

वेदालंकार, दिल्ली ४. डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, उ.प्र. ५. डॉ. रामप्रकाश वर्णी, एटा ६. डॉ. महेश विद्यालंकार, दिल्ली ७. पद्मश्री आचार्य सुकामा, हरियाणा ८. डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, गुरुकुल शिवगंज ९. डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती, नजीबाबाद १०. डॉ. धारणा याज्ञिकी, गुरुकुल शाहजहाँपुर ११. प्रो. नरेश कुमार धीमान, अजमेर १२. आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, बिजनौर १३. डॉ. विनय विद्यालंकार, उत्तराखण्ड १४. आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबाद १५. डॉ. कुलबीर छिकारा, सूचना आयुक्त, हरियाणा १६. डॉ. जगदेव विद्यालंकार, रोहतक १७. आचार्य जीववर्धन शास्त्री, जयपुर १८. डॉ. रामचन्द्र, कुरुक्षेत्र १९. आचार्य अंकित प्रभाकर, अजमेर।

आर्यनेता- श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा २. श्री प्रकाश आर्य, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ३. श्री राजीव गुलाटी, चेयरमैन एम.डी.एच. ४. ठाकुर विक्रमसिंह, अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी ५. श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ६. श्री विनय आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली ७. श्री देवेन्द्रपाल आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ८. श्री किशनलाल गहलोत, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान ९. डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, प्रधान महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर १०. श्री जितेन्द्र भाटिया, आर्यवीरदल दिल्ली ११. श्री देशबन्धु आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा १२. श्री सतीश चढ्ढा, महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा देहली १३. श्री योगेश मुंजाल, प्रधान टंकारा स्मारक ट्रस्ट १४. श्री अजय सहगल, मन्त्री टंकारा स्मारक ट्रस्ट।

भजनोपदेशक - श्री दिनेश पथिक (पंजाब), श्री भूपेन्द्र सिंह आर्य

सम्पूर्ण कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष के रूप में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे. बी. एम. ग्रुप उपस्थित रहेंगे।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप आयकर मुक्त होगा। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। सहयोग हेतु निम्न खातों का प्रयोग करें। ऋषि लंगर हेतु आटा, चावल, दाल, चीनी, घी, तेल आदि सामग्री भी प्रदान कर सकते हैं।

खाताधारक का नाम : परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINISABHA AJMER)

बैंक का नाम : भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर, बैंक बचत खाता संख्या : 10158172715

IFSC - SBIN0031588 UPI ID : PROPKARNI@SBI

निवेदक - ओम्मुनि वानप्रस्थी (प्रधान) कन्हैयालाल आर्य (मन्त्री)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार- संरक्षक, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, डॉ. वेदपाल-संरक्षक एवं सम्पादक परोपकारी, श्री सज्जनसिंह कोठारी, सभा उपप्रधान, जयपुर, श्री दीनदयाल गुप्त, सभा उपप्रधान, श्री जयसिंह गहलोत, सभा उपप्रधान, जोधपुर, डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा, सभा संयुक्त मन्त्री, अजमेर, श्री लक्ष्मण जिज्ञासु, सभा कोषाध्यक्ष, नोयडा, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, पुस्तकाध्यक्ष, गुरुकुल झज्जर, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, अन्तरंग सदस्य, कुरुक्षेत्र, श्री वीरेन्द्र आर्य, अन्तरंग सदस्य, अजमेर।

अन्य ट्रस्टीगण- श्री शत्रुघ्न आर्य, श्री सुभाष नवाल, मुनि सत्यजित्, स्वामी विष्वङ् परिव्राजक, श्री विजयसिंह भाटी, श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर, डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, डॉ. योगानन्द शास्त्री, श्री सत्यानन्द आर्य।

आयोजक- परोपकारिणी सभा, अजमेर
(महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की एकमात्र उत्तराधिकारिणी संस्था)
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज.

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं।

आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है।

दूरभाष - **8890316961**

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक,
कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की २००वीं जन्म-जयंती शताब्दी समारोह से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कार्यालय समय प्रात: १० से सायं ५ बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं।

- कन्हैयालाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

सम्पर्क -

रमेश चन्द्र आर्य
ऋषि उद्यान कार्यालय
0145-2948698

दिवाकर गुप्ता
परोपकारिणी सभा-कार्यालय
मोबाइल - 7878303382, 8890316961

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

- कन्हैयालाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि जन्म शताब्दी समारोह की ऋषि उद्यान में हुई तैयारी बैठक को सम्बोधित करते महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास के अध्यक्ष डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, मंचासीन परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य, प्रधान श्री ओम् मुनि, पुस्तकाध्यक्ष आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, न्यासी डॉक्टर वेदप्रकाश विद्यार्थी व श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर।

विजयनगर आर्य समाज के पदाधिकारियों के साथ ऋषि मेले के पत्रक को प्रदर्शित करते परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री ओम् मुनि, मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य और पुस्तकाध्यक्ष आचार्य विरजानन्द दैवकरणि।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि जन्म शताब्दी समारोह की तैयारी बैठक में उपस्थित अजमेर की विभिन्न आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी।

आर जे/ए जे/80/2024-2026 तक प्रेषण : १५-१६ सितम्बर २०२४ आर.एन.आई. ३९५९/५९

अनन्य ईश्वर भक्त, योगेश्वर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की

२००वीं जयन्ती के अवसर पर

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

दिव्य एवं भव्य

ऋषि मेला

१८-२० अक्टूबर २०२४

सादर आमन्त्रण

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट